Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰہِ الۡمَشۡرِقُ وَالۡمَغۡرِبُ
فَاَیۡنَمَا تُوَلُّوۡا فَثَمَّ وَجۡہُ اللّٰہِ
اِنَّ اللّٰہَ وَاسِعٌ عَلِیۡمٌ

(सूरः बकरः, आयत : 116)

अनुवाद : और अल्लाह ही का है पूरब भी और पश्चिम भी। तो जिस भी दिशा में तुम मुख करो, वहीं अल्लाह का सामना होगा। निस्संदेह अल्लाह बड़ा विस्तार देने वाला (और) सर्वज्ञ है।

वर्ष- 10
अंक - 29
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 मोहर्रम, 1446-47 हिज्री कमरी, 17 वफ़ा 1404 हिज्री शम्सी, 17 जुलाई 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह का शुक्रिया अदा करता हूँ कि मेरे निशानों के साक्षी केवल मुसलमान ही नहीं बल्कि दुनिया की सभी कौमें मेरे निशानों की गवाह हैं। फ़ाल्हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

114. निशान - मुझे ताऊन (प्लेग) के फैलने के बारे में इलहाम हुआ: الامراض تشاع والنفوس تُضاع "अल्-अमराज़ तशाआ वन्नुफ़ूस तुज़ाआ" अर्थात बीमारियाँ फैलाई जाएँगी और जानों का नुकसान होगा। अब जो कोई चाहे देख ले कि मैंने इस इलहाम को ताऊन फैलने से पहले अख़बार 'अल्-हकम' और 'अल्-बद्र' में प्रकाशित कर दिया था। फिर इसके बाद पंजाब में ताऊन का इतना प्रकोप हुआ कि हज़ारों घर मौत से उजड़ गए।

115. निशान - रिसाला 'सिराज-ए-मुनीर' में ताऊन के आने के बारे में यह एक भविष्यवाणी है: "या मसीहल ख़ल्कि अदवाना" अर्थात हे मसीह जो मख़्लूक के लिए भेजा गया, हमारे ताऊन की ख़बर ले। फिर इसके बाद भयंकर ताऊन फैली और हज़ारों बंदे-खुदा ताऊन से डरकर मेरी तरफ दौड़े, मानो उनकी ज़ुबान पर यही वाक्य था: "या मसीहल ख़ल्कि अदवाना"। और यह भविष्यवाणी जिस तरह मेरी किताब 'सिराज-ए-मुनीर' में दर्ज है, उसी तरह सैकड़ों लोगों को इसकी पहले से सूचना दी गई थी।

116. निशान - एक बार सुबह के वक्त वह्यी-ए-इलाही से मेरी ज़ुबान पर यह जारी हुआ: "अब्दुल्लाह ख़ान, डेरा इस्माइल ख़ान" और समझाया गया कि इस नाम का एक व्यक्ति आज कुछ रुपये भेजेगा। मैंने कुछ हिंदुओं के सामने, जो वह्य के सिलसिले के जारी रहने के मुनकिर हैं और वेद पर ही सब कुछ समाप्त मान बैठे हैं, इस इलहाम-ए-इलाही का ज़िक्र किया और कहा कि अगर आज यह रुपया नहीं आया तो मैं सच्चा नहीं हूँ। उनमें से एक हिंदू, भजन दास नाम का ब्राह्मण, जो आजकल एक जगह का पटवारी है, बोल उठा कि वह इस बात का इम्तिहान करेगा और डाकखाने में जाएगा। उन दिनों कादियान में डाक दोपहर के बाद दो बजे आती थी। वह उसी वक्त डाकखाने गया और बहुत हैरान होकर वापस आया कि वास्तव में अब्दुल्लाह ख़ान नाम के एक व्यक्ति ने, जो डेरा इस्माइल ख़ान में एक्स्ट्रा असिस्टेंट है, कुछ रुपये भेजे हैं। वह हिंदू बहुत आश्चर्यचकित और परेशान होकर बार-बार मुझसे पूछता था कि यह बात आपको किसने बताई? उसके चेहरे से हैरानी और स्तब्धता के निशान साफ़ झलक रहे थे। तब मैंने उससे कहा कि उसने बताया जो छिपे भेद जानता है, वही अल्लाह है जिसकी हम पूजा करते हैं। चूँकि हिंदू लोग उस ज़िंदा अल्लाह से अनजान हैं जो हमेशा अपनी कुदरत और इस्लाम की सच्चाई के नमूने दिखाता रहता है, इसलिए आमतौर पर हिंदुओं की यह आदत है कि पहले तो अल्लाह के अजीब निशानों से इन्कार करते हैं, और जब कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जिसके हाथ से ग़ैब की बातें ज़ाहिर हों तो हैरानी और आश्चर्य के समुद्र में डूब जाते हैं।

इसी तरह लाला शर्मपत का हाल हुआ था, जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ। उसका भाई भीमबर दास और एक और व्यक्ति ख़ुशहाल नाम का किसी जुर्म में जेल हो गए थे। शर्मपत ने इम्तिहान के तौर पर, न कि किसी यक़ीन से, मुझसे पूछा था कि इस मुक़दमे का अंजाम क्या होगा? और दुआ की भी दरख़्वास्त की थी। तब मैं कई दिन उसके लिए दुआ करता रहा। आख़िर वह अल्लाह, जो आलमुल ग़ैब है, उसने रात के वक्त यह छिपी बात मुझ पर खोल दी कि मुक़दमे का अंजाम यह होगा कि भीमबर दास की आधी सज़ा कम कर दी जाएगी, जैसा कि मैंने अपनी कश्फी हालत में देखा था कि आधी सज़ा मैंने अपनी क़लम से काट दी है। मगर मुझ पर यह भी ज़ाहिर किया गया कि ख़ुशहाल को पूरी सज़ा भुगतनी पड़ेगी, एक दिन भी नहीं कटेगा। और भीमबर दास की आधी सज़ा का कम होना सिर्फ़ दुआ के असर से होगा, मगर दोनों में से कोई भी बरी नहीं होगा और ज़रूर है कि मुक़दमा वापस ज़िला में आए और अंजाम वही हो जो बयान किया गया।

मुझे याद है कि जब यह सारी बातें पूरी हो गईं तो शर्मपत हैरान रह गया और हमारे अल्लाह की कुदरत ने उसे बहुत चकित कर दिया। उसने मेरी तरफ़ रुक़आ लिखा कि यह सब बातें आपकी नेकबख़्ती की वजह से पूरी हो गई हैं। अफ़सोस कि उसने फिर भी इस्लाम के नूर से कोई फ़ायदा नहीं उठाया और आजकल वह आर्य है। हिदायत तो एक तरफ़, मुझे तो इन लोगों पर इतनी भी उम्मीद नहीं कि वह सच्ची गवाही दे सकें, हालाँकि ज़ाहिर में यही दिखावा है कि सच्चाई का साथ देना चाहिए, मगर इस पर अमल नहीं होता। हाँ, मुझे यक़ीन है कि अगर ऐसे गवाह अर्थात शर्मपत को हलफ़ दिलाया जाए और हलफ़ में झूठ बोलने की हालत में उसकी औलाद पर असर पड़ने का इक़रार कराया जाए तो फिर ज़रूर सच बोल देगा। मेरी कई भविष्यवाणियों की गवाहियाँ उसके पास हैं। हो सकता है कि पीछा छुड़ाने के लिए यह कह दे कि मुझे याद नहीं, मगर हलफ़ एक ऐसी चीज़ है कि ज़रूर याद आ जाएगा। और अगर झूठ बोलेगा तो निसन्देह समझ लो कि मेरा अल्लाह उसे सज़ा देगा, और यह भी एक निशान ज़ाहिर होगा। वह खुले-खुले निशानों का गवाह है।

मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह का शुक्रिया अदा करता हूँ कि मेरे निशानों के साक्षी केवल मुसलमान ही नहीं बल्कि दुनिया की सभी कौमें मेरे निशानों की गवाह हैं। फ़ाल्हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।

117. एक बार एक आर्य मुल्ला, वामल नाम, रोग 'दक़' (टीबी) में मुब्तला हो गया और नाउम्मीदी के निशान ज़ाहिर होते जा रहे थे। उसने सपने में देखा कि एक ज़हरीला साँप उसे काट गया। वह एक दिन अपनी ज़िंदगी से नाउम्मीद होकर मेरे पास रोता हुआ आया। मैंने उसके हक़ में दुआ की तो उत्तर आया: "कुलना या नारु कूनी बरदन व सलामा" अर्थात हमने तप की आग से कहा कि ठंडी और सलामती वाली हो जा। चुनाँचे इसके बाद वह एक हफ़्ते में अच्छा हो गया और आज तक वह ज़िंदा मौजूद है। देखो 'बराहीन-ए-अहमदिया' पेज २२७। मगर यक़ीन है कि उसकी गवाही के लिए भी हलफ़ की ज़रूरत पड़ेगी।

118. निशान - एक बार जब मैं गुरदासपुर में एक फौजदारी मुक़दमे की वजह से (जो करमदीन जहलमी ने मुझ पर दायर किया था) मौजूद था, तो मुझे इलहाम हुआ: "यसअलूनका अन शानिक, कुलिल्लाहु सुम्मा ज़रहुम फी खौदिहिम यलअबून" अर्थात तेरी शान के बारे में पूछेंगे कि तेरी क्या शान और क्या मर्तबा है?

शेष पृष्ठ 3 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अगर हम सोशल मीडिया पर उत्तर देने की बजाय अल्लाह तआला के सामने झुक जाएँ। अपनी नमाज़ों को सुधारकर अदा करें। अपने सज्दों में वह दर्द पैदा करें कि जिससे अल्लाह तआला की ग़ैरत जल्द जोश में आ जाए, तो हम बहुत जल्द उससे बहुत बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हैं जो नतीजे ये लोग अपने उत्तर देने से हासिल करना चाहते हैं।

हमारा काम यह नहीं कि गलत भाषा का इस्तेमाल करें या उस रंग में उत्तर दें जिससे अनजाने में हमारे मुँह से ऐसे शब्द निकल जाएँ जो किसी भी रूप में किसी की भी हतक का सबब बनें और इससे फायदा उठाकर मुख़ालेफ़ीन यह कहते रहें कि हम नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तौहीन करने वाले हैं।

हमारा तो सब कुछ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुर्बान है। आप ही वह ख़ातमुल अंबिया हैं जो अल्लाह तआला के प्यारे और आख़िरी नबी हैं और आपके साथी जो हैं, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जो हैं, उनके बारे में तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बेशुमार जगह वह कलिमात फ़रमाए हैं, वह बातें की हैं जो हमारे मुख़ालेफ़ीन की सोच से भी बुलंद हैं, जो बात वे करते हैं।

"मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि उन्हें मुनासिब है कि उनकी गालियाँ सुनकर बर्दाश्त करें और हरगिज़ हरगिज़ गाली का उत्तर गाली से न दें क्योंकि इस तरह बरकत जाती रहती है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हमारे अख़्लाक बहुत बुलंद और बहुत ऊँचे होने चाहिएँ और जिसके अख़्लाक बुलंद नहीं, उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा नहीं किया।

(सोशल मीडिया के सही इस्तेमाल के संदर्भ में ज़र्रीन नसीहतें)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 जून 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल जहाँ सोशल मीडिया का फायदा है और इससे लाभ उठाया जाता है, वहीं कुछ ऐसी बातें भी होती हैं जो तकलीफ़देह होती हैं और इसी का फायदा उठाते हुए आजकल मुख़ालेफ़ीन जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ अत्यंत अश्लील भाषा का प्रयोग भी करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ वे झूठ और गंदगी बोलते हैं कि अहमदी का दिल छलनी हो जाता है। जिन्हें सुनकर और फिर प्रतिक्रिया में कुछ अहमदी भी उन्हें ग़लत रंग में उत्तर दे देते हैं। नीयत चाहे उनकी साफ़ भी हो, तब भी कभी-कभी ऐसे शब्द निकल जाते हैं जिन्हें ग़लत अर्थ दिए जा सकते हैं। यह हमारा तरीक़ा नहीं है। इससे हर अहमदी को बचना चाहिए।

हमारा काम यह नहीं कि ग़लत भाषा का इस्तेमाल करें या उस रंग में उत्तर दें जिससे अनजाने में हमारे मुँह से ऐसे शब्द निकल जाएँ जो किसी भी रूप में किसी की भी हतक का सबब बनें और इससे फ़ायदा उठाकर मुख़ालेफ़ीन यह कहते रहें कि हम नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की तौहीन करने वाले हैं।

जबकि हमारे दिलों में तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का जो मक़ाम है, उसका तो करोड़वाँ हिस्सा भी इन लोगों को समझ नहीं आता।

हमारा तो सब कुछ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुर्बान है। आप ही वह ख़ातमुल अंबिया हैं जो अल्लाह तआला के प्यारे और आख़िरी नबी हैं और आपके साथी जो हैं, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा जो हैं, उनके बारे में तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बेशुमार जगह वह कलिमात फ़रमाए हैं, वह बातें की हैं जो हमारे मुख़ालेफ़ीन की सोच से भी बुलंद हैं, जो बात वे करते हैं।

फिर हमारे दिलों में सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मक़ाम ही नहीं, यह तो है ही, इस तक तो कोई पहुँच ही नहीं सकता। आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा का भी हमारे दिल में बड़ा मक़ाम है। और इस बात को हर अहमदी को सामने रखना चाहिए और ऐसी बातें करने से हर अहमदी को बचना चाहिए जिससे ग़लत तस्वीर बने या ग़लत तस्वीर बनने का किसी भी रंग में इंतेज़ार हो।

कुछ अहमदी समझते हैं कि हमने यह उत्तर देकर बड़ी ग़ैरत का मुज़ाहिरा किया है। जब उनसे पूछो तो यही उनका उत्तर होता है, जबकि यह नाम-मात्र की ग़ैरत जहालत है। और अगर कोई अहमदी होकर ऐसी बातें करता है जिससे किसी भी तरह ग़लत मतलब निकलता हो, तो वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत को बदनाम करने वाला है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तुम्हें सब्र करना है और हमेशा सब्र दिखाना है। एक जगह आपने फ़रमाया:

"ये मुझे गालियाँ देते हैं लेकिन मैं उनकी गालियों की परवाह नहीं करता और न ही उन पर अफ़सोस करता हूँ, क्योंकि वे इस मुक़ाबले से आजिज़ आ गए हैं और अपनी आजिज़ी को इसके सिवा छुपा नहीं सकते कि गालियाँ दें।"

यह कमीना पन और ओछे हथियार इस्तेमाल कर रहे हैं, इसलिए कि उनके पास कोई दलील नहीं है, कोई उत्तर नहीं है, तो ये लोग सिर्फ़ गालियाँ

देना चाहते हैं। आप फरमाते हैं: "कुफ़्र के फतवे लगाएँ, झूठे मुक़दमे बनाएँ और क़िस्म-क़िस्म के इफ़्तिरा और बहतान लगाएँ। वे अपनी सारी ताक़तों को काम में लाकर मेरा मुक़ाबला कर लें और देख लें कि आख़िरी फैसला किसके हक़ में होता है।" जो कोशिश करनी है तुमने कर लो, लेकिन अल्लाह तआला मेरे साथ है, आख़िरी फैसला तो नज़र आ जाएगा किसके साथ है। फ़रमाया कि "मैं उनकी गालियों की अगर परवाह करूँ तो वह अस्ल काम जो अल्लाह तआला ने मुझे सौंपा है, रह जाता है। इसलिए जहाँ मैं उनकी गालियों की परवाह नहीं करता।"

"मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि उन्हें मुनासिब है कि उनकी गालियाँ सुनकर बर्दाश्त करें और हरगिज़ हरगिज़ गाली का उत्तर गाली से न दें, क्योंकि इस तरह बरकत जाती रहती है।"

वह सब्र और बर्दाश्त के आचरण दिखाएँ और अपने अख़्लाक़ दिखाएँ।

"निसन्देह याद रखो कि अक़्ल और जोश में ख़तरनाक दुश्मनी है। जब जोश और ग़ुस्सा आता है तो अक़्ल क़ायम नहीं रह सकती। लेकिन जो सब्र करता है और बर्दाश्त का नमूना दिखाता है, उसे एक नूर दिया जाता है जिससे उसकी अक़्ल व फ़िक्र की ताक़तों में एक नई रोशनी पैदा हो जाती है और फिर नूर से नूर पैदा होता है। ग़ुस्सा और जोश की हालत में चूँकि दिल व दिमाग़ अंधेरे में होते हैं, इसलिए फिर अंधेरे से अंधेरा पैदा होता है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 180, एडिशन 1984)

फिर यह वह सबक़ है जिसे हमेशा हमें याद रखना चाहिए। और यह जो ख़ुद-साख़्ता कुछ लोग आलिम बन जाते हैं और सोशल मीडिया पर ग़ैर-अहमदियों के जो नाम-मात्र के मुल्ला हैं, उन्हें उत्तर देना शुरू कर देते हैं, जो लोग एतराज़ करते हैं उनके एतराज़ों के उत्तर देने लगते हैं, उन्हें इस चीज़ से बचना चाहिए।

अगर उत्तर तलाश करने हैं तो जमाअत के उलमा से, गहरा इल्म रखने वाले जमाअती लिटरेचर से, उनसे पूछा जाए और उनके उत्तर ऐसे दिए जाएँ जो वाक़ई ठोस हों और उनकी दलीलों को, उनके इल्ज़ामों को रद्द करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो तालीम है, जो हक़ीक़त में सही इस्लामी तालीम है, उस पर अमल करें, वरना आप लोग जमाअत में रहकर फिर जमाअत को बदनाम करने वाले हैं।

अल्लाह तआला हमें शरीरों के शर से बचाए और उन लोगों को भी अक़्ल दे जो झूठी ग़ैरत दिखाने वाले हैं और कभी-कभी बिना वजह कुछ शब्द इस्तेमाल करके फ़ित्ना व फ़साद फैलाने का सबब बन जाते हैं।

अगर हम सोशल मीडिया पर उन उत्तरों के बजाय अल्लाह तआला के सामने झुक जाएँ, अपनी नमाज़ों को सुधारकर अदा करें, अपने सज्दों में वह दर्द पैदा करें कि जिससे अल्लाह तआला की ग़ैरत जल्द जोश में आ जाए, तो हम बहुत जल्द उससे बहुत बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हैं जो नतीजे ये लोग अपने उत्तर देने से हासिल करना चाहते हैं।

इसलिए हर अहमदी को इस चीज़ से बचना चाहिए कि कभी ऐसी बातें न करें जो दुश्मन को बिना वजह यह मौक़ा दे कि अहमदी ने यह कह दिया और वह कह दिया।

हमारे अख़्लाक़ बहुत बुलंद और बहुत ऊँचे होने चाहिएँ और जिसके अख़्लाक़ बुलंद नहीं, उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा नहीं किया।

फिर हमें अपने जाइज़े लेने चाहिएँ। हर एक अपना जाइज़ा ले, सोचे और बजाय ग़लत क़िस्म के उत्तरों के दुआओं की तरफ़ तवज्जो दें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मुख़ालेफ़ीन के शर उन पर पलटे और उनसे बचाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

कह दो कि वह अल्लाह है जिसने मुझे यह मर्तबा बख़्शा है, फिर उन्हें उनके खेल-तमाशे में छोड़ दो। सो मैंने यह इलहाम अपनी उस जमाअत को, जो गुरदासपुर में मेरे साथ थी (जो चालीस आदमी से कम नहीं थी, जिनमें मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. और ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए., प्लीडर भी थे) सुना दिया। फिर जब हम कचहरी में गए तो फ़िरक़-ए-सानी के वकील ने मुझसे यही सवाल किया कि क्या आपकी शान और आपका मर्तबा वैसा ही है जैसा कि 'तिरयाक़ुल क़ुलूब' किताब में लिखा है? मैंने उत्तर दिया कि हाँ, अल्लाह के फ़ज़्ल से यही मर्तबा है, उसी ने यह मर्तबा मुझे अता किया है। तब वह इलहाम जो अल्लाह की तरफ़ से सुबह के वक्त हुआ था, लगभग असर के वक्त पूरा हो गया और हमारी पूरी जमाअत के ईमान में इज़ाफ़ा का सबब बना।

(हक़ीक़तुल वही, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द २२, पृष्ठ २७५)

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

"नमाज़ पढ़ते हुए यह विचार रखें कि हम ख़ुदा के सामने खड़े हैं। ख़ुदा हमें देख रहा है। इसलिए नम्रता और विनम्रता के साथ खड़े हों और जो शब्द दोहरा रहे हैं, उन्हें समझ कर दोहराएँ

"जो भी अच्छा इस्लामी नाम लगे, रख लो। अगर 'मुहम्मद' नाम रखना है, तो वह भी रख लो एक अच्छा मुसलमान बनने के लिए क्या आवश्यक है?"

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आख़िरी ज़माने में मसीह और महदी का ज़ुहूर होगा। तुम उसे पाना और उससे मिलना और मेरा सलाम उसे पहुँचाना।

यह हमारी ज़िंदगी का सबसे बेहतरीन अवसर था कि हमने पहली बार खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपनी आँखों से देखा। अस्पताल की स्थापना हमारे लिए किसी नेमत से कम नहीं, इससे पहले किसी धर्म ने मानवता के बारे में इस तरह से नहीं सोचा था। मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ कि खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपने बीच पाया और इस बात की भी खुशी है कि हमने अपने मध्य विभिन्न देशों के अहमदी भाइयों को एक साथ पाया।

मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि मुझे इस अवसर पर खलीफ़तुल मसीह को देखने का मौका मिला। इससे पहले मैं केवल हज़ूर की तक़रीरें सुना करती थी, लेकिन अब उन्हें देखना ऐसा अनुभव था जिसे मैं बयान नहीं कर सकती।

२२ अक्टूबर २०१८, सोमवार

(भाग द्वितीय)

ग्वाटेमाला की जमाअत के सदस्यों से सामूहिक मुलाक़ात

निरीक्षण के बाद हज़ूर-ए- अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में पधारे जहाँ ग्वाटेमाला की जमाअत के सदस्यों की आपसे सामूहिक मुलाक़ात थी। इनकी संख्या लगभग सौ थी, जिनमें ४४ पुरुष, ४६ महिलाएँ थीं, और शेष बच्चे थे।

इसके अतिरिक्त मैक्सिको का Chiapa क्षेत्र, जो ग्वाटेमाला की सीमा से लगा हुआ है और जहाँ ग्वाटेमाला के ज़रिए जमाअत क़ायम हुई थी, वहाँ के नौमुबाईनीन सदस्य भी इस मुलाक़ात में शामिल हुए। इनकी संख्या ३२ थी। ये लोग हज़ार मील से भी अधिक लंबा सफ़र तय करके पहुँचे थे।

यह लगभग सभी ऐसे लोग थे जिन्हें अपने जीवन में पहली बार हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था।

हज़ूर-ए- अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सब से हालचाल पूछा, जिस पर उन्होंने उत्तर दिया "अल्हम्दुलिल्लाह"। जब हज़ूर ने पूछा कि आप लोग कहाँ-कहाँ से आए हैं, तो ग्वाटेमाला के अमीर साहिब ने अर्ज़ किया कि ग्वाटेमाला के विभिन्न क्षेत्रों से हैं, जहाँ पिछले वर्षों में बैअतें हुई हैं, वहाँ से भी लोग आए हैं। इसी प्रकार Chiapa, मैक्सिको से भी लोग आए हैं।

हज़ूर-ए-अनवर ने स्नेहपूर्वक बच्चों से पूछा कि क्या सभी स्कूल जाते हैं, जिस पर बच्चों ने अर्ज़ किया कि "हम स्कूल जाते हैं"। एक बच्चे ने बताया कि वह डॉक्टर बनना चाहता है, एक ने कहा कि वह चौथी कक्षा में पढ़ता है। हज़ूर-ए-अनवर ने बच्चों को नसीहत करते हुए फ़रमाया "आप सबको पढ़ना है। किसी एक को भी बिना पढ़ाई के नहीं रहना। कोई डॉक्टर बने, कोई इंजीनियर, कोई वकील, कोई शिक्षक हर किसी को कुछ न कुछ पढ़ना है।"

देश मैक्सिको से एक युवा छात्र जमाअत अहमदिया कनाडा में दाख़िल हुए हैं और वहाँ के पहले वर्ष में हैं। हज़ूर-ए- अनवर ने उनसे पूछा कि "उर्दू कितनी सीखी है?" उन्होंने अर्ज़ किया "अभी थोड़ी-थोड़ी सीखी है।"

हज़ूर-ए-अनवर ने उन्हें नसीहत करते हुए फ़रमाया "जामिआ में अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो, दीनी तालीम सीखो, पाँचों नमाज़ें नियमित और जमाअत से पढ़ो। फ़ज्र से पहले कम से कम दो नफ़्ल पढ़ो और उसकी स्थायी आदत बनाओ। उर्दू भाषा सीखने के लिए जमाअत के किसी रिसाले से एक पृष्ठ पढ़ो। 'हफ़्तावार अल्-फज़्ल' है, उसमें से कोई अनुच्छेद पढ़ो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें आसान उर्दू में हैं, उन्हें पढ़ो। रोज़ रात को सोने से पहले 'मल्फ़ूज़ात' का एक पृष्ठ पढ़ा करो।"

हज़ूर-ए-अनवर ने बच्चियों को संबोधित करते हुए फ़रमाया "हमारी जमाअत में बच्चियाँ ज़्यादा शिक्षित होती हैं। आप सबको पढ़ाई में लड़कों से आगे निकलना है। बच्चों और बच्चियों में एक-दूसरे से आगे निकलने की दौड़ होनी चाहिए।"

दो ग्वाटेमालन बच्चियों ने हज़ूर-ए- अनवर की सेवा में फूल भेंट किए। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया "जज़ाकुमुल्लाह।"

एक नौमुबाईन ने पूछा कि "नमाज़ को अच्छे तरीक़े से कैसे अदा किया जा सकता है?"

हज़ूर-ए-अनवर ने उत्तर दिया "नमाज़ पढ़ते हुए यह विचार रखें कि हम ख़ुदा के सामने खड़े हैं। ख़ुदा हमें देख रहा है। इसलिए नम्रता और विनम्रता के साथ खड़े हों और जो शब्द दोहरा रहे हैं, उन्हें समझ कर दोहराएँ।"

हज़ूर ने फ़रमाया "सूरत फ़ातिहा याद करो। 'इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईन' को बार-बार दोहराओ हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।"

"प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब नमाज़ पढ़ रहे हो तो यह समझो कि तुम ख़ुदा को देख रहे हो, और अगर यह न हो सके तो कम से कम यह समझो कि ख़ुदा तुम्हें देख रहा है। जब यह भावना हो जाएगी कि ख़ुदा मुझे देख रहा है, तो नम्रता पैदा होगी और नमाज़ में ध्यान भी होगा।"

एक नौमुबाईन ने पूछा "अगर अल्लाह हमें बेटा या बेटी दे तो उसका कौन-सा इस्लामी नाम रखें?"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया "जो भी अच्छा इस्लामी नाम लगे, रख लो। अगर 'मुहम्मद' नाम रखना है, तो वह भी रख लो।" फिर फ़रमाया "असल बात यह है कि अल्लाह से यह दुआ करनी चाहिए कि वह नेक और सालेह औलाद दे जो ख़ुदा के हक़ और बंदों के हक़ अदा करने वाली हो।"

"बहुत से बच्चे पैदा होते हैं, ग्वाटेमाला में भी और अन्य स्थानों पर भी, लेकिन बहुत से बच्चे बिगड़ जाते हैं, बुरी संगत में पड़ जाते हैं, नशे में लिप्त हो जाते हैं, फिर अपराध करते हैं और जेलों में चले जाते हैं। इसलिए सदा अल्लाह से यही दुआ करो कि जो औलाद दे वह नेक और सच्ची हो।"

एक छात्र ने कहा "वह जामिआ कनाडा या जामिआ यूके में जाना चाहता है।" इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया "अगर मुर्ब्बी बनना चाहते हो तो एक फ़ैसला करो और उस पर डटे रहो। अगर जामिआ जाना है तो कनाडा जाओ। जामिआ कनाडा को एक मान्यता प्राप्त शैक्षणिक संस्था का दर्जा मिला हुआ है, इसलिए वहाँ जा सकते हो। लेकिन यूके नहीं जा सकते। जामिआ यूके के पास अभी ऐसा दर्जा नहीं है। कनाडा या घाना इन दो में से किसी एक में जा सकते हो।"

एक नौमुबाईन ने पूछा "एक अच्छा मुसलमान बनने के लिए क्या आवश्यक है?"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया "आप ख़ुदा से कोई भी काम छिपा नहीं सकते। लोगों से छिपा सकते हो, लेकिन ख़ुदा से नहीं। जब भी कोई काम करो तो यह याद रखो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है।"

"ख़ुदा तआला ने जो बुनियादी हुक्म दिए हैं, उन पर अमल करो। अल्लाह की इबादत करो, अच्छे अख़्लाक़ अपनाओ, लोगों के हक़ अदा करो। प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमान वह है जिससे दूसरों को उसके हाथ और ज़ुबान से कोई तकलीफ़ न पहुँचे।"

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि अच्छा अहमदी बनने के लिए क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए। तो आपने फ़रमाया 'ख़ुदा से डर, फिर जो चाहे कर' (इल्हाम ११ मार्च १८९१)।

"जो अल्लाह से डरता है, वह ग़लत काम नहीं कर सकता। वही अच्छा मुसलमान बनता है।"

ग्वाटेमाला के एक नौमुबाईन ने अर्ज़ किया "हमारे लिए दुआ करें, हमारी मदद करें, हम अंधकार में हैं, ख़ुदा हमें हिदायत दे।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया "ख़ुदा ने आपको हिदायत दी है, नूर की ओर, रौशनी की ओर ले आया है। अब आपका काम है कि यह संदेश दूसरों तक पहुँचाएँ। प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो चीज़ अपने लिए पसंद करो, वह दूसरों के लिए भी पसंद करो। आपने अपने लिए इस्लाम को पसंद किया है, अब यह अहमदियत का पैग़ाम दूसरों को भी पहुँचाओ। अल्लाह आपको तौफ़ीक़ दे कि आप यह कार्य कर सको।"

एक नौमुबाईन महिला ने कहा "मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ। अमेरिका से डॉक्टर आते हैं और जमाअत के मेडिकल कैंप लगते हैं और एक स्कूल भी खुला हुआ है। यहाँ इसकी बहुत ज़रूरत थी।" इस पर अमीर साहिब ग्वाटेमाला ने अर्ज़ किया "ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमेरिका के तहत 'मसरूर स्कूल' चल रहा है।"

हज़ूर ने फ़रमाया "स्कूल को जारी रखो।" फिर फ़रमाया "हम यह सेवा कर रहे हैं। जहाँ संभव होता है, हम यह सेवा करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ादियान में बहुत से मरीज़ों का इलाज करते थे और दवा देते थे। ग़रीब महिलाएँ झुंडों की शक्ल में आती थीं। आप उनका इलाज करते थे।"

"किसी ने आपसे कहा इस तरह तो आपका बहुत-सा वक़्त इन लोगों के लिए ख़र्च हो जाता है। आपने फ़रमाया ये ग़रीब लोग हैं, यहाँ इलाज की ज़रूरत होती है, पास कोई अस्पताल नहीं है। इसलिए मैं दवाएँ मंगाकर रखता हूँ जो उनके इलाज में काम आती हैं।"

हज़ूर ने फ़रमाया "यही कार्य हमें भी जारी रखना है और हम यह हर जगह कर रहे हैं और आगे भी स्कूल और अस्पताल खोलेंगे।"

एक महिला ने अर्ज़ किया "मैं हज़ूर का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि आपने हमारे देश में तशरीफ़ लाया। आज मेरा बेटा नहीं आ सका, उसे काम से छुट्टी नहीं मिली। उसने कंप्यूटर साइंस पढ़ी है। मेरी तमन्ना है कि वह भी जामिआ में दाख़िल हो।" इस पर हज़ूर ने महिला को एक क़लम भेंट की और फ़रमाया "यह अपने बेटे को दे देना।"

एक महिला ने अर्ज़ किया "हज़ूर हम महिलाओं के लिए कोई नसीहत फ़रमाएँ।"

हज़ूर ने फ़रमाया "माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है। प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरत को बहुत बड़ा मुक़ाम दिया है। एक तो औरत गर्भावस्था में कष्ट उठाती है, फिर प्रसव का समय तकलीफ़देह होता है, फिर बच्चे की परवरिश इसका समय मुश्किलों और पीड़ा से भरा होता है। इसलिए बच्चे का फ़र्ज़ बनता है कि वह अपनी माँ की सेवा करे।"

"प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत तक पहुँचने के लिए बच्चों को अपनी माँ की सेवा करनी चाहिए।"

"बच्चे के जन्म के बाद उसकी सबसे ज़्यादा सेवा माँ ही करती है। इसलिए माँ को यह दर्जा दिया और बच्चे को यह हुक्म दिया गया कि माँ की सेवा करो ताकि जन्नत प्राप्त कर सको। दूसरी ओर माँ पर यह ज़िम्मेदारी डाली कि तुम्हारे क़दमों तले जन्नत उस वक़्त बनेगी जब तुम बच्चों की सही परवरिश करोगी।"

"माँ की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि बच्चों की अच्छी परवरिश हो, उन्हें बुरे माहौल से बचाया जाए। जब अहमदियत को स्वीकार कर लिया है तो बच्चों को धर्म सिखाओ, उन्हें सच्चा इबादतगुज़ार और उच्च चरित्र वाला बनाओ।"

"एक घटना है जिसका ज़िक्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किया है एक बच्चा बचपन में चोरी करता था, फिर चोरी उसकी आदत बन गई और बड़ा होकर डाकू बन गया। फिर उसने क़त्ल करने शुरू कर दिए। अंततः वह पकड़ा गया और उसे फाँसी की सज़ा मिली।"

"सज़ा से पहले उससे पूछा गया तुम्हारी आख़िरी इच्छा क्या है? उसने कहा मैं अपनी माँ की ज़ुबान चूसना चाहता हूँ, प्यार करना चाहता हूँ। माँ को बुलाया गया। लड़का माँ के पास आया और इतनी ज़ोर से ज़ुबान काटी कि दो टुकड़े हो गई। लोगों ने कहा तू ज़ालिम है, तूने सारी उम्र ज़ुल्म किया और अब फाँसी पर चढ़ने से पहले माँ को दर्द दे रहा है?"

"उसने कहा मैंने अपनी माँ की ज़ुबान इसलिए काटी क्योंकि जब मैं चोरी करता था और लोग शिकायत लेकर मेरी माँ के पास आते थे तो वह मेरी पर्दापोशी करती थी और कहती थी कि कुछ नहीं हुआ। अगर उस वक़्त उसने मुझे समझाया होता और सही परवरिश की होती तो आज मैं डाकू न बनता, फाँसी पर न चढ़ता। मैंने उसकी ज़ुबान इसलिए काटी क्योंकि यह परवरिश करने वाली नहीं थी, बल्कि मेरी ज़िंदगी को बर्बाद करने वाली थी।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अहमदी माताओं को ऐसा बनना चाहिए कि वे अपने बच्चों की अच्छी परवरिश करके उन्हें नेक और इबादतगुज़ार बनाएँ, जो देश की सेवा करने वाले हों। आपकी युवा पीढ़ी ने इस देश की तरक़्क़ी के लिए भूमिका निभानी है।

अंत में Chiapa, मैक्सिको से आने वाली एक महिला ने अर्ज़ किया कि वह आज बैअत करना चाहती है। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि बैअत फ़ॉर्म भर दो और बैअत कर लो। साथ ही हज़ूर ने अमीर साहिब ग्वाटेमाला से फ़रमाया कि अगर नमाज़-ए-मग़रिब और इशा के बाद बैअत का कार्यक्रम रखना है तो रख लो।

मुलाक़ात के समापन पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह आप सबका हाफ़िज़ और नासिर हो।

बेलीज़ के प्रतिनिधि मंडल की मुलाक़ात

इसके पश्चात देश बेलीज़ (Belize) से आए प्रतिनिधिमंडल को हज़ूर-ए-अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बेलीज़ से 21 व्यक्तियों पर आधारित यह प्रतिनिधिमंडल ग्वाटेमाला पहुँचा था।

एक नव-अहमदी महिला ने अर्ज़ किया कि जमाअत ज़रूरतमंदों की जो सेवा और सहायता कर रही है, वह मुझे अत्यंत प्रभावित कर रही है। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हम हर स्थान पर ज़रूरतमंदों की सहायता करते हैं। लोकहित के लिए हमारे विभिन्न कार्यक्रम जारी हैं।

एक महिला ने अर्ज़ किया कि मैं दो वर्ष पहले अहमदी बनी थी और अब मैं दूसरों तक जमाअत का संदेश पहुँचा रही हूँ। अहमदिया समुदाय बहुत अच्छा है, लेकिन कुछ लोग इसके बारे में नकारात्मक सोच भी रखते हैं। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया कि मीडिया ने इस्लाम को बदनाम किया हुआ है और इस्लाम को बुरे रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसकी वजह से कुछ लोगों की सोच नकारात्मक हो जाती है।

एक अहमदी महिला, ख़दीजा साहिबा, भी इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल थीं। हज़ूर ने फ़रमाया: आप तो यूके के सालाना जलसे पर आई थीं। उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं 2015 में जलसा यूके में आई थी और लजना में तब्लिग़ की इंचार्ज हूँ। महिलाएँ बैअत कर रही हैं, अहमदी बन रही हैं, लेकिन उन्हें कुछ कठिनाइयाँ हैं। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया कि बेलीज़ में अहमदी बनने वाले सभी स्थानीय लोग

हैं, वहाँ कोई पाकिस्तानी नहीं है। तो फिर उन्हें अपने में शामिल करने में क्या समस्या है?

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: इन महिलाओं को इस्लाम की शिक्षा दो, उनके जो मसाइल हैं, उन्हें इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार हल करो। उन्हें बताओ कि मुसलमान होने का अर्थ क्या है। अल्लाह के समीप होओ, उच्च चरित्र अपनाओ। हज़ूर ने फ़रमाया: आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। उनकी तालीम व तरबियत करनी होगी। हम दुआ करेंगे कि आप तब्लिग़ करें और उन्हें मज़बूत अहमदी बनाएँ।

हज़ूर ने फ़रमाया: तब्लिग़ तो एक निरंतर जिहाद है। इसमें बहुत मेहनत और संघर्ष की आवश्यकता होती है। एक रात में दिल नहीं बदले जा सकते, न किसी का मिज़ाज बदला जा सकता है। यह एक दीर्घकालिक प्रयास है। अल्लाह हर अहमदी की मदद करे और उसकी नुसरत फ़रमाए।

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: बेलीज़ से महिलाएँ अधिक आई हैं, पुरुष नहीं आए। अपने पतियों और बेटों-युवाओं को भी लाना चाहिए था ताकि उनके ईमान भी मज़बूत हों।

एक महिला ने अर्ज़ किया कि वह पिछले चार वर्षों से अहमदी हैं। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया: अगला सालाना जलसा यूके में आने का कार्यक्रम बनाओ। उन्होंने अर्ज़ किया कि जब बेलीज़ की मस्जिद तैयार हो जाए तो हमारी दरख़्वास्त है कि हज़ूर उसके उद्घाटन के लिए पधारें। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया: इंशा अल्लाह, जब मस्जिद बन जाएगी तो मैं आने की कोशिश करूँगा।

इसके पश्चात बेलीज़ की चार स्थानीय बच्चियों ने सामूहिक रूप में तरन्नुम के साथ यह नज़्म पढ़ी "है दस्त क़िब्लानुमा लाइलाहा इलल्लाह"। हज़ूर-ए-अनवर ने स्नेहपूर्वक MTA वालों को बुलाया और फ़रमाया कि आकर इसकी रिकॉर्डिंग करें।

फ़रमाया: आपने जिस अंदाज़ में यह नज़्म पढ़ी है, वह मुझे पसंद आया। अल्लाह बरकत दे। साथ ही फ़रमाया: अब आप इस नज़्म का अर्थ भी सीखें और अपने मिशनरी से कहें कि वह आपको इसका मतलब सिखाए।

कनाडा में रेजाइना की जमाअत के वे सदस्य जिन्होंने वहाँ की मस्जिद का निर्माण किया था, वे बेलीज़ की मस्जिद के लिए एक नक्शा तैयार करके लाए थे। उन्होंने वह नक्शा हज़ूर-ए-अनवर की सेवा में प्रस्तुत किया। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया: इसे लंदन भेज दो, वहाँ देखकर बताया जाएगा कि क्या करना है।

अंत में प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने बारी-बारी से हज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बेलीज़ के प्रतिनिधिमंडल की हज़ूर-ए-अनवर से यह मुलाक़ात का कार्यक्रम रात साढ़े सात बजे तक जारी रहा।

विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडलों की मुलाक़ात

इसके पश्चात कार्यक्रम के अनुसार निम्नलिखित देशों से आए प्रतिनिधिमंडलों की हज़ूर-ए-अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात थी

मैक्सिको, होंडुरस, इक्वाडोर, पनामा, पैराग्वे, कोस्टा रिका, एल साल्वाडोर।

देश मैक्सिको से 34 व्यक्तियों का प्रतिनिधिमंडल आया था। प्रतिनिधिमंडल के अधिकांश सदस्य नव-अहमदी थे। उनमें कुछ ऐसे लोग भी थे जो अभी तब्लिग़ के दायरे में हैं। यह प्रतिनिधिमंडल मैक्सिको की तीन जमाअतों Mexico City, Querétaro और Merida से आया था। इनकी अधिकांश संख्या सड़क मार्ग से 30 घंटे की यात्रा करके पहुँची थी।

होंडुरस से 10 व्यक्तियों और इक्वाडोर से 8 व्यक्तियों का प्रतिनिधिमंडल ग्वाटेमाला पहुँचा था, जबकि पनामा और कोस्टा रिका से तीन-तीन और एल साल्वाडोर तथा पैराग्वे से चार-चार व्यक्तियों के प्रतिनिधिमंडल आए थे। ये सभी लोग आज की इस मुलाक़ात में सम्मिलित थे।

एक बच्ची ने अर्ज़ किया कि पारिवारिक जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। कुछ महिलाएँ घर में समय नहीं दे पातीं। मैं विवाहित हूँ, पढ़ भी रही हूँ और नौकरी भी करना चाहती हूँ। अभी मेरे कोई बच्चे नहीं हैं।

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अभी तो पत्नी की ज़िम्मेदारी है, माँ की नहीं। अगर पढ़ाई करनी है तो अपने पति से पूछना चाहिए। उसकी इच्छा और अनुमति भी हो ताकि घर के हालात अच्छे रहें।

इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पति तो यही चाहेंगे कि मैं घर पर रहूँ, लेकिन मैं अपने पति की मदद करना चाहती हूँ।

हज़ूर ने फ़रमाया: जहाँ तक महिला की शिक्षा का संबंध है, तो शिक्षा प्राप्त करना ज़रूरी है ताकि वह अपने बच्चों की अच्छी परवरिश कर सके।

हज़ूर ने फ़रमाया: इस्लाम में घरेलू स्तर पर महिला की ज़िम्मेदारी तय की गई है। अल्लाह ने औरत से कहा है कि घर में रहो, घर के कार्य करो, बच्चों की देखभाल और परवरिश करो। दूसरी ओर पुरुष से कहा है कि घर के सभी ख़र्चों की ज़िम्मेदारी निभाओ और पत्नी व बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करो।

हज़ूर ने फ़रमाया: अगर मेडिकल प्रोफ़ेशन में हो तो यह मानवता की सेवा है। यदि कुछ समय नौकरी करनी पड़े और पति भी प्रसन्न हो कि यह मानवता की सेवा है, तो नौकरी कर लो। यह ध्यान रहे कि मक़सद धन कमाना नहीं, बल्कि मानवता की सेवा करना है।

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: इस्लाम यह चाहता है कि इंसान में क़नाअत (संतोष) हो, अर्थात् जो उपलब्ध है उसी में गुज़ारा किया जाए। इंसान की इच्छाएँ निरंतर बढ़ती रहती हैं, न घटती हैं और न समाप्त होती हैं। इन बढ़ती हुई इच्छाओं को पूरा करने के लिए नौकरी करना ग़लत है, हाँ, ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नौकरी करना उचित है।

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि वास्तविक बात यह है कि आगे के लिए ऐसी अच्छी नस्ल छोड़ी जाए जो देश और क़ौम की सेवा करने वाली हो। यदि अहमदी माताएँ अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझ लें कि नस्लों की तालीम व तरबियत हो और वे शिक्षित हों, तो आने वाले पचास वर्षों में या उसके बाद ऐसा समय आएगा कि ग्वाटेमाला जैसे देशों में भी अहमदियत के कारण तरक़्क़ी होगी। यह एक ऐसी ज़िम्मेदारी है जो केवल अपनी वर्तमान पीढ़ियों तक सीमित नहीं, बल्कि आने वाली नस्लों में भी स्थानांतरित करने योग्य है।

पैराग्वे से आए एक प्रतिनिधि ने अर्ज़ किया कि हमारे देश में पहला सालाना जलसा होने वाला है, हज़ूर हमारे जलसे के लिए दुआ करें।

इस पर हज़ूर-ए- अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाए।

एक्वाडोर से आए एक नवअहमदी ने पूछा कि हम अपने बच्चे के लिए अच्छे माता-पिता कैसे बन सकते हैं?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: मेरे जुमा के ख़ुत्बात सुना करो, मैं अक्सर माँ-बाप को उनकी ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ। चाहे नए अहमदी हों या पुराने, सबके लिए ज़रूरी है कि ख़िलाफ़त से जुड़े रहें और मज़बूत संबंध बनाने की कोशिश करें। बच्चों की तरबियत के लिए सबसे अच्छा ज़रिया है नमूना। जब तक घर में, अपने अख़्लाक़ में, अपने अमल में, अपनी आदतों में एक अच्छा उदाहरण क़ायम नहीं किया जाएगा, तब तक बच्चों की सही तरबियत नहीं हो सकती। अगर बच्चा बड़ा होकर देखता है कि मेरे पिता मेरी माँ के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते, तो इसका बुरा असर बच्चे की परवरिश पर पड़ेगा। अगर पिता कहता है कि सच बोलो, लेकिन ख़ुद झूठ बोलता है, तो बच्चा कहेगा कि यह मेरी ग़लत तरबियत कर रहा है ख़ुद कुछ करता है और मुझे कुछ और कहता है। इसलिए बच्चों की तरबियत के लिए माँ-बाप का अमल दुरुस्त होना चाहिए, उनकी अच्छी आदतें हों, अच्छे अख़्लाक़ हों।

पनामा से आए एक नवअहमदी ने अर्ज़ किया कि मैं हज़ूर-ए-अनवर का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। मुझे प्रोस्टेट की बीमारी थी। मैंने हज़ूर की सेवा में दुआओं की दरख़्वास्त की थी। अब मेरा ऑपरेशन हो चुका है और मैं सेहतमंद हूँ।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया : अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाह तआला ने शिफ़ा दी।

होंडुरस से आए एक नवअहमदी ने अर्ज़ किया कि मुझे बैअत किए एक साल हो गया है। घर वालों की ओर से भी और दोस्तों की ओर से भी विरोध हो रहा है। मैं इंटरनेशनल लॉ पढ़ रहा हूँ। मेरी अभी शादी नहीं हुई है। मैं उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा सीखना चाहता हूँ। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया : अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाए।

पैराग्वे से वहाँ के डिप्टी मिनिस्टर ऑफ़ एजुकेशन, रॉबर्ट कैनो (Robert Cano) साहिब तशरीफ़ लाए थे, जो वहाँ के डिप्टी मिनिस्टर ऑफ़ रिलिजियन भी हैं। उन्होंने हज़ूर-ए-अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में अर्ज़ किया कि उनके ग्वाटेमाला आने का उद्देश्य Ministry of Education की ओर से हज़ूर की सेवा में एक पत्र पेश करना है कि वे भविष्य में जमाअत अहमदिया के साथ मिलकर कार्य करना चाहते हैं। अतः उन्होंने स्वयं यह पत्र हज़ूर की सेवा में पेश किया।

एक नवअहमदी ने पूछा कि आजकल भौतिकवाद बहुत बढ़ गया है। एक ईमान वाला व्यक्ति इस वातावरण में अपने आप को कैसे बेहतर बना सकता है?

इस पर हज़ूर ने फ़रमाया: अल्लाह की ओर झुको, इबादतों की ओर ध्यान दो, इस्लामी शिक्षाओं पर चलने की कोशिश करो, और अख़्लाक़ के उच्च मापदंड स्थापित करो, तभी तुम अल्लाह की रज़ा प्राप्त कर सकते हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि मैं इसलिए आया हूँ कि बंदे को अल्लाह के क़रीब करूँ और जो दूरी हो गई है, उसे ख़त्म करूँ।

हज़ूर-ए- अनवर ने फ़रमाया: तुम पाँचों नमाज़ें इस भावना से अदा करो कि अगर तुम अल्लाह को नहीं देख रहे, तो यह विश्वास रखो कि अल्लाह तुम्हें देख रहा है इससे दिल में आजिज़ी (विनम्रता) पैदा होगी।

हज़ूर ने फ़रमाया: हर दिन का मूल्यांकन करते हुए दिन गुज़ारो कि आज मैंने क्या तरक़्क़ी की? कौन-कौन सी बुराइयाँ छोड़ीं और कौन-कौन सी नेकियाँ अपनाईं। दीन को प्राथमिकता दो यही तुम्हारे लिए बेहतरी का मार्ग है।

मैक्सिको से आए एक युवा ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि वह खुद्दामुल अहमदिया का क़ाइद है। हमारे कुछ तब्लिग़ी कार्यक्रम हो रहे हैं, उनके लिए दुआ की दरख़्वास्त है। हमें वापसी में भी 28 से 30 घंटे का सफर करना है। इसके लिए भी दुआ की दरख़्वास्त है। साथ ही क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और समझने की भी।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला तुम्हारी सभी नेक ख्वाहिशें पूरी करे और तुम्हें नेकी में आगे बढ़ाए।

क़ायद खुद्दामुल अहमदिया ने हज़ूर की सेवा में मैक्सिको का झंडा पेश किया। हज़ूर-ए-अनवर ने उस झंडे को टेबल पर रखे गिफ़्ट बैग के कोने में खड़ा करके रखा और फ़रमाया: जब झंडा दिया है तो उसे खड़ा ही रखना चाहिए।

मैक्सिको से आए एक नवअहमदी के सवाल के उत्तर में हज़ूर-ए- अनवर ने फ़रमाया:

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आख़िरी ज़माने में मसीह और महदी का ज़ुहूर होगा। तुम उसे पाना और उससे मिलना और मेरा सलाम उसे पहुँचाना। अतः जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार प्रकट हुए और मसीह व महदी होने का दावा किया, तो लोगों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया और उनके ख़िलाफ़ फ़तवे जारी किए। शुरू में कुछ लोगों ने आपको स्वीकार किया, फिर धीरे-धीरे संख्या बढ़ती रही। आज यह संख्या करोड़ों में पहुँच चुकी है। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं।

हज़ूर ने फ़रमाया: हमें उम्मीद है कि एक दिन मुसलमानों की विशाल बहुसंख्या अहमदियत को स्वीकार करेगी। यह कब होगा, यह तो नहीं कह सकते, लेकिन यह अवश्य होगा।

हज़ूर ने फ़रमाया: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं मूसा के मसीह (यीशु) के क़दमों पर आया हूँ। मूसी मसीह का संदेश तीन सदियों में फैला था। आपने फ़रमाया कि तीन सौ वर्ष नहीं बीतेंगे कि दुनिया की बहुसंख्या अहमदियत को स्वीकार कर लेगी। अभी तो केवल 130 वर्ष ही हुए हैं। आप आशा रखें, इंशा अल्लाह दुनिया स्वीकार करेगी।

इस समय हर जगह मौलवियों और विरोधियों की ओर से जमाअत का विरोध है, लेकिन हम अपना कार्य कर रहे हैं। इंशा अल्लाह एक दिन आप इसका फल ज़रूर देखेंगे।

अंत में मैक्सिको की लजनात और बच्चियों ने स्पैनिश भाषा में एक सुंदर नज़्म पेश की। इसके पश्चात सभी भाइयों ने हज़ूर-ए-अनवर से मुशाफ़ा करने की सौभाग्य प्राप्त किया। इसके बाद सवा आठ बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले गए, जहाँ फ़ैमिली मुलाक़ातों का सिलसिला आरंभ हुआ। मुबल्लीगीन कराम और कुछ स्थानीय भाइयों ने अपने परिवारों सहित हज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। इन सभी को हज़ूर के साथ तस्वीर खिंचवाने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

बैअत की रस्म

इसके पश्चात आठ बजकर पैंतालीस मिनट पर हज़ूर मस्जिद में तशरीफ़ लाए और नमाज़-ए-मग़रिब व इशा मुरक़्क़ब तौर पर अदा करवाई। नमाज़ों के बाद बैअत की रस्म अदा की गई। इस अवसर पर विभिन्न देशों से आए सभी नवअहमदियों और पुराने अहमदियों ने हज़ूर के मुबारक हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया। अंत में हज़ूर ने दुआ करवाई।

इसके पश्चात हज़ूर मस्जिद "बैतुल अव्वल" ग्वाटेमाला से रवाना होकर रात दस बजे अपनी निवासगाह Porta Hotel तशरीफ़ ले गए।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से निम्नलिखित जातियों के नवअहमदियों ने हज़ूर-ए- अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया:

Costarican, Paraguayan, Mexican, Honduran, Panamese, Ecudorian, El Salvadorian, Guatemalan, Belizean

ये वे जातियाँ हैं जिनके भाग्यशाली और सौभाग्यशाली लोग हालिया वर्षों में अहमदियत में दाख़िल हुए हैं। मध्य अमेरिका और दक्षिण अमेरिका के ये वे नये राष्ट्र हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चश्मे से सराबोर हुए हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था:

"हर एक क़ौम इस चश्मे से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा। यहाँ तक कि यह ज़मीन पर फैल जाएगा।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन, ज़िल्द 20, पृष्ठ 409)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस भविष्यवाणी के अनुसार, इन नई जातियों के ये नवअहमदी आज अपने जीवन में पहली बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात और दीदार का सौभाग्य प्राप्त कर रहे थे और आज वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चश्मे से सराबोर हो रहे थे। आज का दिन इन लोगों के जीवन का एक ऐतिहासिक दिन था। उनके जज़्बात और एहसासात शब्दों में व्यक्त नहीं किए जा सकते। कुछ लोगों ने अपने दिल की कैफ़ियत का इज़्हार किया।

मैक्सिको के एक नवअहमदी इवान फ्रांसिस्को साहिब कहते हैं: मैंने एक ऐसे नूरानी शख़्स को देखा है जिन्हें अल्लाह तआला ने मेरे लिए हादी के रूप में भेजा है और मेरे ईमान को मज़बूत करने के लिए। जब हमने ख़लीफ़तुल मसीह के हाथ पर बैअत की, वह एक ऐसा लम्हा था जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। उस क्षण मुझे शारीरिक रूप से ऐसा लगा जैसे मेरा पूरा शरीर गरम हो गया, पसीना आने लगा और ऐसा लगा जैसे एक करंट मेरे जिस्म से दौड़ रहा है और वह जाते-जाते मेरे सभी गुनाह भी साथ ले गया। अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हमें ख़लीफ़तुल मसीह अता किया। मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिए अच्छाई की ओर पहला क़दम है और यह मेरे अंदर एक परिवर्तन लाएगा।

इरलांडा मिरेया साहिबा कहती हैं: मेरी हमेशा से यह ख्वाहिश थी कि मैं प्यारे हज़ूर से मिलूँ। मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं सकी। जब मैंने हज़ूर को देखा तो मुझे बहुत सुकून मिला और मैं यक़ीन नहीं कर सकती थी कि हज़ूर-ए-अनवर मेरे सामने मौजूद हैं।

मेक्सिको से आई एक नव-बैअतकर्ता महिला लौरा माटिल्डे साहिबा कहती हैं इस ग्वाटेमाला की यात्रा के पश्चात् मेरे दिल में यह बात पूरी तरह पक्की हो गई है कि अल्लाह तआला मुझे जहाँ चाहता है, मैं वहीं पर हूँ। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि मैं आत्मिक और भावनात्मक रूप से अत्यंत सुकून और शांति का अनुभव कर रही हूँ। अन्य देशों से आईं अपनी अहमदी बहनों और भाइयों से मिलकर मेरा ईमान और भी तरोताज़ा हुआ, और उससे भी बढ़कर जब मुझे प्यारे हज़ूर के पीछे नमाज़ें अदा करने का अवसर मिला तो मेरा विश्वास अल्लाह तआला

और अहमदियत यानी सच्चे इस्लाम में और भी अधिक दृढ़ हो गया। मैं अत्यंत शांति का अनुभव कर रही हूँ और मेरी यह अभिलाषा है कि मैं इसी मार्ग पर बनी रहूँ। अल्लाह करे कि ऐसा ही हो।

विसेन्ते ब्रीओनेस साहिब लिखते हैं मेरा संबंध मेक्सिको सिटी की जमाअत से है। जब मुझे बताया गया कि मुझे ग्वाटेमाला जाने का अवसर मिल रहा है, तो मैं बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन जब यह पता चला कि वहाँ प्यारे खलीफा से मुलाक़ात होगी तो मेरी खुशी कई गुना बढ़ गई। जब हमारी हज़ूर से मुलाक़ात हुई तो मैं अत्यंत आनंदित हुआ, क्योंकि मुझे उनके पास काफी देर बैठने का मौका मिला। मैंने कुछ समय पहले मेक्सिको सिटी में बैअत की थी, लेकिन हज़ूर के हाथ पर बैअत करना मेरी ज़िंदगी की वह घटना थी जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। उन्होंने अपने आँसू पोंछते हुए कहा कि यह मेरी ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत दिन था।

मेक्सिको से ही आए एक नव-बैअतकर्ता मिगुएल आंजेल साहिब कहते हैं मैं दिल की गहराई से हज़ूर का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि उन्होंने हमें यह अनुमति दी कि हम उनके साथ कुछ क्षण बिता सकें। साथ ही ग्वाटेमाला की जमाअत में कई नए मित्र भी बनाए। सच यह है कि इस्लाम अहमदियत में कोई सीमा नहीं है और न ही कोई भेदभाव जो हमें अलग कर सके। किसी देश की सरहद हमें अलग नहीं कर सकती। हम सब आपस में भाई-भाई हैं। यदि कोई अंतर है तो वह केवल भाषा का है, अन्यथा हम सब भाई हैं। प्यारे हज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ते समय, भले ही हम 10 से 15 विभिन्न देशों से आए थे, फिर भी हम एक थे और एक ही खलीफा के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे।

मेक्सिको की एक नव-बैअतकर्ता क्लारा जुआना गोंज़ालेस रामिरेज़ साहिबा कहती हैं मैं मेक्सिको के प्रतिनिधि दल के साथ हज़ूर अनवर से मुलाक़ात और बैअत की रस्म में शरीक होने के बारे में कहना चाहती हूँ कि मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जो मेरे जज़्बात को बयान कर सकें। मैं बहुत प्रसन्न हूँ और अत्यंत संतुष्ट हूँ। मुझे लगता है कि बैअत की रस्म और हज़ूर अनवर से मुलाक़ात के माध्यम से मेरा ईमान और अधिक मज़बूत हुआ है, क्योंकि मेरी ज़िंदगी में मेरे आसपास कुछ ऐसे लोग हैं जो इस्लाम के धर्म को नहीं समझते और मुझसे दूरी बनाए रखना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि मैं या तो जमाअत के साथ रहूँ या उनके साथ। मैंने निर्णय लिया है कि मैं जमाअत के साथ रहना चाहती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मैं इस्लाम की शिक्षाओं को सीखती रहूँ और जमाअत की सेवा भी करती रहूँ। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया को उत्तरोत्तर बढ़ाता जाए। आमीन।

होंडुरास से आई एक नव-बैअतकर्ता रोसा डेल्मी रिवास साहिबा कहती हैं यह मेरी ज़िंदगी में पहली बार था कि मुझे अपने देश से बाहर निकलने और इतना लंबा सफर तय करने का अवसर मिला। हमें होंडुरास से ग्वाटेमाला पहुँचने में 16 घंटे लगे। रास्ते में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन जैसे ही हमने जमाअत की मस्जिद और हज़रत खलीफ़तुल मसीह को देखा तो सफर की सारी परेशानियाँ पल भर में भुला दीं। मुझे जमाअत के बहुत ही प्यारे और अच्छे लोगों से मिलने का मौका मिला, जिन्होंने मेरे साथ अपने परिवार के सदस्य जैसा व्यवहार किया। अमेरिका से आई एक अहमदिया महिला ने मुझसे कहा कि मैं उनकी बेटी जैसी हूँ। इस यात्रा का सबसे सुंदर हिस्सा खलीफ़ा-ए-वक़्त से मुलाक़ात थी। मैं हज़रत खलीफ़तुल मसीह से व्यक्तिगत रूप से कोई बात नहीं कर सकी, क्योंकि ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं किसी और ही दुनिया में हूँ, और मैं केवल बैठकर खलीफ़ा-ए-वक़्त को देखती रहना और उनकी बातें सुनना चाहती थी। यह ऐसा अनुभव था जिसे शब्दों में बयान करना असंभव है। इस यात्रा के दौरान जमाअत की शिक्षाओं के संदर्भ में मेरे ज्ञान में और वृद्धि हुई। जब हज़ूर मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो मुझे उनके सामने एक नज़्म पढ़ने का अवसर भी मिला, और सामूहिक मुलाक़ात के दौरान भी नज़्म पेश करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

होंडुरास से आए मैनोलो होसे एस्कोटो साहिब, जो कि एक टीवी रिपोर्टर हैं, अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं यह यात्रा मेरे लिए एक अत्यंत ही आनंददायक अनुभव थी। मुझे जमाअत-ए-अहमदिया मुस्लिमा के विश्वासों और मानवता की सेवा के प्रयासों के बारे में और जानकारी प्राप्त हुई। इस बार नासिर अस्पताल का उद्घाटन किया गया, जिसके माध्यम से हज़ारों ग़रीबों की सहायता की जाएगी। खलीफ़ा-ए-वक़्त के विचारों को जानना एक अजीब और विशेष अनुभव होता है। उनका संदेश सदा शांति और वैश्विक भाईचारे पर आधारित होता है। वे लोगों की सोच और मानसिक स्तर के अनुसार बात करते हैं और समाज में मुसलमानों के प्रति बने हुए ग़लत प्रभावों को दूर करते हैं।

एडविन अरमान्दो मोंटोया साहिब, जो कि होंडुरास जमाअत के ख़ुद्दामुल-अहमदिया के सदस्य हैं, अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं मेरे लिए खलीफ़ा-ए-वक़्त के सामने बैठना, उनका संदेश सुनना और उस पर अमल करना, ताकि अपने ईमान में वृद्धि कर सकें, एक अत्यंत हृदयस्पर्शी अनुभव था। इस यात्रा की सबसे अच्छी बात यह थी कि हमें हज़ूर से मुलाक़ात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़ूर ने कृपा करके मुझे एक क़लम भी उपहार स्वरूप प्रदान किया। मुझे आशा है कि खलीफ़ा-ए-वक़्त जल्द ही हमारे देश होंडुरास में भी तशरीफ़ लाएंगे। खलीफ़ा बहुत ही बुद्धिमत्ता से बात करते हैं। जब आप किसी प्रश्न का उत्तर देते हैं तो अत्यंत विवेकपूर्ण और व्यापक उत्तर देते हैं। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला सदा खलीफ़ा-ए-वक़्त की ताईद व नुसरत करता रहे।

सहर चौधरी साहिबा, जो कि होंडुरास में नियुक्त जमाअत के मुबल्लिग़ की पत्नी हैं, प्रतिनिधिमंडल की यात्रा के बारे में लिखती हैं हज़ूर अनवर को देखने के लिए हमारी ग्वाटेमाला की यात्रा एक ऐसा अनुभव था जिसे मैं कभी नहीं भूल सकती। यह एक ऐतिहासिक अवसर था, जिसका हिस्सा बनने की हमें तौफ़ीक़ मिली। अल्हम्दुलिल्लाह। होंडुरास के प्रतिनिधिमंडल में मेरे और मेरे पति के अतिरिक्त दो जमाअत सदस्य और एक रिपोर्टर भी शामिल थे। यात्रा के दौरान रास्ते में कुछ समस्याएँ आईं। जिस GPS की हम मदद ले रहे थे, उसने हमें एक पहाड़ी और बहुत ही ख़तरनाक कच्चे रास्ते पर डाल दिया, जहाँ गाड़ी को गिरने से बचाने के लिए कोई सुरक्षा उपाय नहीं था। उस दिन अल्लाह तआला ने हमें अपनी हिफ़ाज़त में रखकर इस ख़तरनाक स्थिति से बचाया।

और इससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक बात यह थी कि हमारे साथ जो दो नव-बैअतकर्ता थे, वे बार-बार यही कह रहे थे "चिंता मत करो, अल्लाह हमारे साथ है। हम अल्लाह की राह में जा रहे हैं।" हम हज़ूर की आमद से एक दिन पूर्व ग्वाटेमाला पहुँच गए थे और इंतज़ार का वह दिन हमारी ज़िंदगी का सबसे लंबा दिन प्रतीत हो रहा था। वे दो दिन जब हज़ूर ग्वाटेमाला में मौजूद थे, अत्यंत ही बरकतों से भरे दिन थे। हम सब बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि हमें हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का अवसर मिला। उनकी इमामत में नमाज़ें अदा करने, बैअत की तौफ़ीक़ प्राप्त करने, नासिर अस्पताल के उद्घाटन समारोह और इस ऐतिहासिक अवसर में शरीक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़ूर अनवर का भाषण अत्यंत प्रभावशाली था, जिसका मूल संदेश यह था कि वास्तविक मानवता और भाईचारे का क्या अर्थ है और सच्चा प्रेम व हमदर्दी क्या है।

इक्वाडोर के एक नव-अहमदी अपने भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं खलीफ़ा-ए-वक़्त की उपस्थिति में मुझे एक बेशकीमती खज़ाना प्राप्त हुआ, और मेरे भीतर रूहानियत, शांति, प्रसन्नता और आनंद की भावनाएँ समा गईं और मुझे अत्यंत सुकून प्राप्त हुआ। बैअत के दौरान जब आपने अपना मुबारक हाथ मेरे हाथ पर रखा तो वह एक ऐसी सौभाग्यपूर्ण घड़ी थी जो मुझे पहले कभी प्राप्त नहीं हुई थी।

इक्वाडोर से एक लजना इमाअल्लाह सदस्य, जो लगभग एक वर्ष पूर्व अहमदी बनी थीं, को पहली बार हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर मिला। वे कहती हैं ग्वाटेमाला की यात्रा मेरे और मेरे बेटे के लिए अत्यंत सुखद थी। जब हमने पहली बार हज़ूर अनवर को देखा तो वह हमारे लिए एक विशेष क्षण था, क्योंकि उससे हमें शांति, प्रेम और सब्र प्राप्त हुआ और हमें खलीफ़तुल मसीह की शख़्सियत में एक दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। फिर मुलाक़ात के दौरान जब मेरे बेटे ने हज़रत खलीफ़तुल मसीह से गले मिलकर मुआनक़ा किया तो हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई और हमने इसे अपने लिए एक सौभाग्य और बरकत समझा। इक्वाडोर वापसी की यात्रा हमारे लिए अत्यंत दुःखद होगी, क्योंकि हमें अपने

अहमदी बहन-भाई और अपने प्रिय खलीफ़ा की बहुत याद आएगी। हम आशा करते हैं कि जल्द ही हमें दोबारा अपने खलीफ़ा को देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

इक्वाडोर से आए एक पत्रकार कहते हैं खलीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात मेरे लिए एक विशेष अनुभव था और मैं उन भावनाओं से भरा था जिन्हें बयान करना कठिन है। मेरे पास वह शब्द नहीं हैं जिनसे मैं अपने जज़्बात का इज़हार कर सकूँ। मैं अत्यंत आशाओं के साथ अल्लाह के बंदे "खलीफ़तुल मसीह" से मिलने गया था। केवल उनके दर्शन से ही मैं शांत हो गया और मेरे भीतर एक अजीब सी शांति छा गई। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह समय और स्थान इतने विशेष हैं कि संभवतः यह मुझे दोबारा कभी प्राप्त नहीं होंगे। खलीफ़ा का संदेश हमें सदा सोचने पर मजबूर करता है कि लोग मानवता की सेवा के लिए क्या कर रहे हैं। खलीफ़ा का संदेश सदैव निर्बलों की सहायता, उनके शिक्षा और कल्याण तथा समाज में न्याय की शिक्षा देता है।

खलीफ़ा के भाषण सदैव अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण होते हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वे दिल की गहराइयों से अपना संदेश देते हैं। वे सदा दुनिया की भलाई, आपसी एकता, न्याय और मानवाधिकारों की शिक्षा देते हैं। खलीफ़ा के शब्द चुम्बक जैसे प्रभाव रखते हैं। भाषा न समझने के बावजूद मैं उनकी हर बात बड़े ध्यान से सुनता हूँ।

ग्वाटेमाला से एक नव-बैअतकर्ता सुलेमान रोड्रीगेज़ साहिब कहते हैं खलीफ़तुल मसीह का ग्वाटेमाला आना हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है। हमारी जमाअत पर अल्लाह का यह बहुत बड़ा फ़ज़्ल है कि खलीफ़ा-ए-वक़्त हमारी जमाअत में तशरीफ़ लाए। जब हमें ज्ञात हुआ कि हज़ूर ग्वाटेमाला तशरीफ़ ला रहे हैं तो हमारे भीतर आनंद और हर्ष की कोई सीमा न रही। मेरे भीतर एक आत्मिक दृढ़ता उत्पन्न होने लगी और इसमें कोई संदेह नहीं कि मैंने अपने भीतर एक विशेष परिवर्तन को महसूस किया है। मेरी हज़ूर से विनती है कि वे हमारी जमाअत को अपनी विशेष दुआओं में याद रखें।

ग्वाटेमाला से एक नव-बैअतकर्ता लीज़ा पिंटो साहिबा अपने भाव इस प्रकार व्यक्त करती हैं मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि खलीफ़तुल मसीह ग्वाटेमाला तशरीफ़ लाए। यह मेरे लिए बहुत गर्व और सम्मान की बात है, और मेरे लिए एक महान अनुभव रहा, जिससे मेरा दिल ख़ुशी से भर गया। खलीफ़ा-ए-वक़्त के पवित्र और मुबारक अस्तित्व को देखकर मेरे आँसू खुशी से बह निकले और मेरे ईमान को एक नई ताज़गी और मज़बूती मिली।

ग्वाटेमाला से दोमिनगो तीउल साहिब कहते हैं मेरा संबंध काबुन जमाअत से है। हज़ूर अनवर की आमद पर मैंने अपने आप को ईमानी और रूहानी दृष्टि से बहुत जोश और उत्साह से भरा हुआ पाया। हज़ूर की आमद से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ। मुझे खलीफ़ा-ए-वक़्त के साथ कुछ समय बिताने का अवसर भी मिला और मैं उस व्यक्ति से मिला जो अल्लाह तआला के बहुत क़रीब है।

ग्वाटेमाला सेएक साहेब अपने अनुभव व्यक्त करते हुए कहती हैं हज़ूर अनवर के इतने क़रीब रहने का मुझे पहले कभी अवसर नहीं मिला था। पहले केवल तस्वीरों में देखा था, लेकिन अब पहली बार इमाम-ए-वक़्त को सामने देखने का अवसर मिला है, इसके लिए मैं अल्लाह तआला की अत्यंत आभारी हूँ। हज़ूर अनवर से बात करने का अवसर मेरी ज़िंदगी का सबसे बेहतरीन अवसर था।

ग्वाटेमाला से मिगुएल पांज़ोस साहिब अपने जज़्बात इन शब्दों में व्यक्त करते हैं यह हमारी ज़िंदगी का सबसे बेहतरीन अवसर था कि हमने पहली बार खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपनी आँखों से देखा। अस्पताल की स्थापना हमारे लिए किसी नेमत से कम नहीं, इससे पहले किसी धर्म ने मानवता के बारे में इस तरह से नहीं सोचा था। मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ कि खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपने बीच पाया और इस बात की भी खुशी है कि हमने अपने मध्य विभिन्न देशों के अहमदी भाइयों को एक साथ पाया। अल्लाह तआला का शुकर है कि खलीफ़ा-ए-वक़्त की वजह से हमारे भीतर एक आत्मिक परिवर्तन उत्पन्न हुआ।

आलिया तुराइदा साहिबा ने कहा खलीफ़ा-ए-वक़्त को अपने सामने देखकर मैंने अपने अंदर एक गर्व और प्रसन्नता महसूस की। आज मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं एक अहमदी हूँ और इस कारण मैं इस्लाम की सर्वोत्तम शिक्षाओं को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करूँगी।

क्लॉडिया साहिबा ने अपने जज़्बात इन शब्दों में व्यक्त किए मैं बहुत प्रसन्न हूँ और स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे खलीफ़तुल मसीह को अपने देश में देखने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं अल्लाह तआला से दुआ करती हूँ कि यह मुलाक़ात मेरे और मेरे परिवार के लिए बरकत का साधन बने। मेरे पास वह शब्द नहीं हैं जिनसे मैं अपने जज़्बात को बयान कर सकूँ। जब मैं सामूहिक मुलाक़ात में हज़ूर के साथ बैठी हुई थी, उस समय मेरे मन में यह विचार आ रहा था कि मैं हज़ूर से बहुत सी बातें करूँगी, लेकिन मेरे जज़्बात उन सब पर हावी हो गए और मैं कुछ भी न कह सकी। मेरी गुज़ारिश है कि हज़ूर मेरे और मेरी फ़ैमिली के लिए दुआ करें। मेरी शादी को दस साल हो चुके हैं लेकिन मुझे औलाद नहीं है, अल्लाह तआला मुझे औलाद की नेमत से नवाज़े।

जमाअत चिआपास (मेक्सिको) से ख़दीजा गोमेज़ साहिबा अपने जज़्बात का इज़हार करते हुए कहती हैं मैं अल्लाह तआला का शुकर अदा करती हूँ कि मुझे खलीफ़तुल मसीह से मिलने का मौका मिला और हमारे सवालों के उत्तर भी मिले। मेरी इस्लाम से मुहब्बत और बढ़ी है। बैअत करने से मेरा ईमान एक नई ज़िंदगी की तरह जाग उठा है। मैं प्यारे हज़ूर से दुआ की दरख़्वास्त करती हूँ कि मेरी और पूरी जमाअत चिआपास के ईमान और समझ में वृद्धि हो।

सुरैय्या गोमेज़ साहिबा ने कहा मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करती हूँ कि मुझे इस अवसर पर खलीफ़तुल मसीह को देखने का मौका मिला। इससे पहले मैं केवल हज़ूर की तक़रीरें सुना करती थी, लेकिन अब उन्हें देखना ऐसा अनुभव था जिसे मैं बयान नहीं कर सकती। यह ऐसे जज़्बात हैं जो मेरे दिल की गहराइयों से निकले हैं। मैं सामूहिक मुलाक़ात में मौजूद थी। हज़ूर से हुई मुलाक़ात ने मुझे एक बड़ा सबक दिया है जिसे मैं अपने साथ लेकर लौट रही हूँ।

यासमीन गोमेज़ साहिबा अपने जज़्बात का इज़हार करते हुए कहती हैं इस मुलाक़ात में शामिल होना मेरी ज़िंदगी की एक अत्यंत सुंदर याद है, क्योंकि यह मेरे लिए पहली बार था कि मैंने हज़ूर अनवर को क़रीब से देखा। और मेरे जज़्बात ऐसे थे कि मुझे खुशी के आँसू आ रहे थे। हज़ूर ने जो भी बात की, उससे मुझे अपनी ज़िंदगी को बेहतर बनाने का एक अवसर प्राप्त हुआ।

मेक्सिको के एक नव-बैअतकर्ता ख़ीसुस वायेहो सेगूरा (Jesus Vallejo Segura) साहिब ने कहा जमाअत अहमदिया से परिचय और जमाअत से संबंध स्थापित करना मेरे लिए एक अत्यंत बड़ा इनाम है। यह मेरी ख़ुशक़िस्मती है कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआओं को स्वीकार किया। मैं अंधकार में था, अल्लाह तआला ने स्वयं मुझे और मेरे परिवार को रौशनी की ओर ले आया और मुझे अपनी ज़िंदगी में परिवर्तन का अवसर मिला। मैं हज़ूर के ग्वाटेमाला दौरे का धन्यवाद करता हूँ और विशेष रूप से यह भी कि आपने मेरे उस प्रश्न का जो इबादत के बारे में था, बहुत संतोषजनक उत्तर दिया।

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

क्या एक महिला अपना मेहर स्वयं निर्धारित कर सकती है? क्या महिला की चुप्पी उसकी सहमति पर दाल्ल (साक्ष्य) है? क्या महिला की अनुपस्थिति में उसका वली (संरक्षक) गलत बयानी भी कर सकता है?
एक अहमदी का किसी गैर-जमाअती महिला के साथ स्वयं निकाह पढ़ने, फिर उस महिला को तलाक देने और उसके बाद उस महिला के बयत करने के बाद उस निकाह की शरई हैसियत क्या है?
नमाज़-ए-तस्बीह में पढ़ी जाने वाली तस्बीहात चार रकातों में तीन सौ की तादाद में कैसे पूरी हो सकती हैं?
सरकारी और गैर-सरकारी बैंकों से मिलने वाला मुनाफ़ा सूद की श्रेणी में आता है या नहीं?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-39)

प्रश्न: एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि उन्हें फेमिनिस्ट (नारीवादी) विचार आते हैं जो इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध हैं। साथ ही उन्होंने पूछा है कि महिला निकाह में अपना मेहर स्वयं क्यों निर्धारित नहीं कर सकती? उसकी चुप्पी उसकी रज़ामंदी क्यों समझी जाती है? महिला में शर्म और चुप्पी इतनी पसंद क्यों की जाती है, जबकि हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ महिलाओं के अधिकारों की बात होती है? साथ ही, निकाह के समय यदि महिला स्वयं मौजूद ही नहीं है तो उसकी मर्ज़ी के बारे में उसका वली (संरक्षक) गलत बयानी भी तो कर सकता है?

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 18 जून 2021 को इस सवाल के उत्तर में निम्नलिखित हिदायतें अता फ़रमाईं। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: किसी चीज़ के बारे में विचार आना या किसी चीज़ पर एतराज़ पैदा होना आमतौर पर अज्ञानता या उस चीज़ के बारे में पूरी जानकारी न होने की वजह से होता है। और एतराज़ करने वाला इंसान कभी-कभी सुनी-सुनाई बातों पर भरोसा करके एतराज़ कर रहा होता है। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ने हमें यह शिक्षा दी है कि कोई भी फैसला करने से पहले उस चीज़ के बारे में पूरी तरह शोध कर लिया करो। जैसा कि अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फरमाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا

(सूरह अन-निसा: 95)

अर्थात्: "ऐ वे लोग जो ईमान लाए हो! जब तुम अल्लाह की राह में सफर कर रहे हो तो अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो और जो तुम पर सलाम भेजे, उससे यह न कहो कि तू मोमिन नहीं है। तुम दुनियावी जीवन के माल चाहते हो, तो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सारे सामान हैं। इससे पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर फज़्ल किया। इसलिए अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो। निस्संदेह अल्लाह उससे जो तुम करते हो, पूरी तरह वाकिफ़ है।"

एक और जगह फ़रमाया:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ

(सूरह अल्-हुजुरात: 7)

अर्थात्: "ऐ वे लोग जो ईमान लाए हो! अगर कोई फासिक़ (पापी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो उसकी छानबीन कर लिया करो, ऐसा न हो कि तुम जहालत (अज्ञानता) से किसी क़ौम को नुक़सान पहुँचा बैठो और फिर अपने किए पर पछताओ।"

इस्लाम ने अपने अनुयायियों को हर मामले में पूरी तरह छानबीन करने की हिदायत दी है और यक़ीन के मुक़ाबले में सिर्फ़ गुमान (अनुमान) करने को पसंद नहीं किया। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है:

إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا

(सूरह यूनस: 37)

"निस्संदेह गुमान (अनुमान) हक़ की जगह कुछ भी काम नहीं देता।"

साथ ही, क़ुरआन-ए-करीम ने कई जगहों पर यह भी बताया है कि अल्लाह और उसके रसूल के मुकर्रिरीन (इन्कार करने वाले) धर्म के मामलों में कभी किसी यक़ीन पर आधारित नहीं होते, बल्कि वे सिर्फ़ अनुमान और कल्पना की बातें करते हैं। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ने मोमिनों को गुमान से बचने की तालीम दी और कुछ प्रकार के गुमान को गुनाह भी बताया। जैसा कि फ़रमाया:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ

(सूरह अल्-हुजुरात: 13)

"ऐ ईमान वालो! बहुत से अनुमानों से बचा करो। निस्संदेह कुछ अनुमान गुनाह होते हैं।"

आपने लिखा है कि आपको इस्लाम की शिक्षाओं के विरुद्ध विचार आते हैं। साथ ही, आपने लिखा है कि आप इस्लाम के अहकाम (आदेशों) के बारे में रिसर्च कर रही हैं। रिसर्च करना बहुत अच्छी आदत है, लेकिन इस दौरान यह बात भी ध्यान में रखनी ज़रूरी है कि आपकी रिसर्च की बुनियाद किन चीज़ों पर है। क़ुरआन-ए-करीम, सुन्नत-ए-नबवी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और हदीसों को समझने के लिए अल्लाह तआला ने इस दौर में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को जो 'हुक्म व अद्ल' बनाकर दुनिया की इस्लाह के लिए भेजा है, उसका यही मक़सद है कि इस्लाम की असली शिक्षाएँ, जो धरती से उठकर सुमेरु (आसमान) पर जा चुकी थीं, उन्हें वापस लाकर दुनिया के सामने पेश किया जाए। इसलिए अपनी रिसर्च में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की किताबों के अध्ययन को प्राथमिकता दें और बार-बार उनका अध्ययन करें। इसके बाद ख़ुलफ़ा-ए-अहमदिय्यत की किताबें, जिनकी बुनियाद भी वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के दिए हुए 'इल्म-ए-कलाम' पर है, उनका अध्ययन करें तो इंशाअल्लाह आपके सारे शक व शुबहात दूर हो जाएँगे।

रही बात आपके सवालों की, तो ये भी ग़लतफ़हमी और इस्लाम की शिक्षाओं से पूरी तरह वाकिफ़ न होने की वजह से हैं। इस्लामी शिक्षा के मुताबिक़, लड़की के निकाह के लिए उसकी रज़ामंदी सबसे ज़्यादा अहमियत रखती है और कोई निकाह उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। यह कहना कि उसकी चुप्पी को उसकी रज़ामंदी समझा जाता है, यह भी ग़लत बात है। निकाह के लिए लड़की से न सिर्फ़ उसकी बाक़ायदा मर्ज़ी पूछी जाती है, बल्कि निकाह फॉर्म पर लड़की के दस्तख़त होते हैं और उसके दस्तख़त के साथ दो गवाहों की इस बात पर गवाही होनी ज़रूरी है कि इस लड़की ने इन दो गवाहों के सामने अपनी मर्ज़ी से इस निकाह फॉर्म पर दस्तख़त किए हैं। चुप्पी को रज़ामंदी समझना, यह इस्लाम की शिक्षा नहीं, बल्कि कुछ इलाक़ाई और रिवाज़ी रस्में हैं।

हाँ, यह बात सही है कि इस्लाम ने लड़की के निकाह के लिए उसकी मर्ज़ी के अलावा उसके वली (संरक्षक) की मर्ज़ी को भी ज़रूरी बताया है, जो उसका बहुत करीबी रिश्तेदार (जैसे उसका पिता या भाई आदि) होता है। इस हुक्म में एक बड़ी हिकमत यह है कि चूँकि लड़की एक ख़ानदान से दूसरे ख़ानदान में जा रही होती है, इसलिए उसके निकाह में उसके वली की शर्त रखकर दूसरे ख़ानदान पर यह स्पष्ट किया गया है कि अगर इस औरत पर किसी तरह का ज़ुल्म हुआ, तो उसके अपने ख़ानदान के लोग उसके साथ हैं, जो इस मामले में उत्तरदेही तलब कर सकते हैं।

लेकिन वली की इस शर्त में भी औरत की मर्ज़ी को इस तरह प्राथमिकता दी गई है कि अगर किसी लड़की को शिकायत हो कि उसका वली उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उसका रिश्ता करना चाहता है, तो हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सुन्नत के अनुसार, ख़लीफ़तुल मसीह (रूहानी पिता होने के नाते) उस औरत के वली की विलायत (संरक्षकता) को रद्द करके अपनी नुमाइंदगी में उस औरत का वकील नियुक्त कर सकता है और उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ उसका निकाह करवा सकता है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया में इसी पर अमल होता है और कई अहमदी बच्चियों ने ख़लीफ़तुल मसीह के ज़रिए अपने इस हक़ को हासिल किया है।

इजाब-ओ-क़बूल (निकाह प्रस्ताव और स्वीकृति) की मजलिस चूँकि मर्दों की

मजलिस होती है और इस्लाम ने कई हिकमतों के मद्देनज़र ग़ैर-महरम मर्दों और औरतों के खुलेआम मिलने-जुलने को पसंद नहीं किया, इसलिए इस्लाम ने औरत की इज़्ज़त और वक़ार को ध्यान में रखते हुए उसके बजाय उसके वली को इजाब-ओ--क़बूल करने की हिदायत दी है। लेकिन इससे पहले निकाह के सारे मामलों को तय करने में औरत की मर्ज़ी और रज़ामंदी को पूरी तरह प्राथमिकता दी गई है।

जैसा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के ज़माने में एक सहाबी को रिश्ता तय करने से पहले लड़की को एक नज़र देखने का इशारा फ़रमाया गया। जब लड़की के पिता ने अपनी लड़की को किसी ग़ैर मर्द को दिखाने से इन्कार कर दिया, तो लड़की ने हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का इशारा सुनकर दरवाज़े से बाहर आकर उस सहाबी से कहा: "अगर हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का हुक्म है, तो तुम मुझे देख सकते हो।" (सुनन इब्ने माजा, किताबुन निकाह, बाबुन नज़र इलल मरअति इज़ा अरादा अय्यतज़व्वजहा)

इस तरह, इस्लाम ने दूसरे अहकाम की तरह निकाह और शादी के मामलों में भी जायज़ हद्दों में रहते हुए औरत को पूरा-पूरा अख़्तियार (अधिकार) दिया है। हाँ, मज़हब कुछ मामलों में जहाँ औरतों पर कुछ पाबंदियाँ लगाता है, वहाँ मर्दों पर भी कुछ पाबंदियाँ लगाता है। लेकिन चूँकि शैतान हर दौर में इंसान को बहकाने के लिए तरह-तरह के रास्ते ढूँढता रहता है, और यह ज़माना जिसमें दज्जाली ताक़तें (जो शैतान की ही नुमाइंदगी करती हैं) लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटकाने के लिए पूरी ताक़त लगा रही हैं, वे लोगों ख़ासकर नौजवान नस्ल के दिमाग़ों में तरह-तरह के शुबहात पैदा करके उन्हें मज़हब से दूर करने की कोशिश कर रही हैं।

इसलिए हर अहमदी मर्द और औरत का फ़र्ज़ है कि वह इस समाज में रहते हुए समाज की बुराइयों से ख़ुद को बचाए और इस्लामी अक़ीदा (मूल्यों) का बेहतरीन नमूना पेश करके दूसरों तक इस्लाम का असली पैग़ाम पहुँचाए। समाज में इस्लामी शिक्षाओं को लागू करने की पूरी कोशिश करे, न कि अंधाधुंध इन समाजी बुराइयों का शिकार होकर इस्लामी शिक्षाओं को भूल जाए।

अब आपको यह फैसला करना है कि आप अल्लाह तआला के हुक्मों को मानते हुए मज़हब के रास्ते पर चलकर जो बहरहाल कुछ मुश्किलों भरा रास्ता है अपनी दुनिया और आख़िरत को ख़ूबसूरत बनाना चाहती हैं, या शैतान और उन दज्जाली ताक़तों की चमकदार बातों और उनके दिखावटी आकर्षक रास्तों पर चलकर अपनी दुनिया और आख़िरत को बर्बाद करने का सामान करना चाहती हैं।

प्रश्न: माननीय सचिव जनरल अमूर-ए-आम्मा जर्मनी ने एक अहमदी द्वारा गैर-जमाअती महिला के साथ स्वयं निकाह पढ़ने, बाद में उस महिला को तलाक देने और फिर उस महिला के बयत करने के मामलों को लिखकर इस निकाह की शरई हैसियत के बारे में माननीय मुफ्ती साहिब से मसला पूछा। यह मामला हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा में पेश होने पर हुज़ूर अनवर ने माननीय अमीर साहिब जर्मनी को अपने मकतूब दिनांक 25 जुलाई 2022 में निम्नलिखित उसूली हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर: अगर इस शख़्स ने यह निकाह लड़की और उसके वली की रज़ामंदी के साथ गवाहों की मौजूदगी में पढ़ा है, और जमाअती निज़ाम के तहत इस निकाह के लिए उन्होंने फॉर्म भरकर इस निकाह को रजिस्टर करवाया है और जिस जमाअत में यह साहिब मुक़ीम हैं, उस हल्क़े में उनके निकाह का लोगों को इल्म हुआ है तो फिर यह निकाह जायज़ और दुरुस्त है। लेकिन अगर इस निकाह में मज़कूरा बाला उमूर का ख्याल नहीं रखा गया और छिप-छिपाकर निकाह पढ़ लिया गया है और निकाह के बाद भी इसकी इस तरह तश्हीर नहीं हुई कि फ़िक़ैन के हल्क़े-ए-अहबाब को इसका इल्म हुआ हो तो यह ख़ुफ़िया निकाह के ज़ुमरे में आएगा। लिहाज़ा इस बारे में इन साहिब को जो तअज़ीरी सज़ा हुई है वह बिल्कुल दुरुस्त है।

प्रश्न: एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ से नमाज़-ए-तस्बीह पढ़ने के तरीके के बारे में पूछा है कि इस नमाज़ में पढ़ी जाने वाली तस्बीहात चार रकअत में तीन सौ की तादाद में कैसे मुकम्मल हो सकती हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब दिनांक 25 जुलाई 2021 में इस सवाल का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया:

उत्तर: नमाज़-ए-तस्बीह के बारे में मर्वी अहादीस से यह बात क़तअन के साथ साबित है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद इस नमाज़ को कभी अदा नहीं किया और न ही खुलफ़ा-ए-राशिदीन से इस नमाज़ के पढ़ने का कोई सबूत मिलता है। इसी तरह इस्लाम की नशअत-ए-सानिया के लिए मबऊस होने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी इस नमाज़ के पढ़ने की कोई रिवायत हमें नहीं मिलती।

बल्कि कुछ अहादीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को यह नमाज़ सिखाई और इसके पढ़ने की उन्हें तलक़ीन फरमाई। इसी लिए उलमा-ए-सलफ़ में नमाज़-ए-तस्बीह के मुताल्लिक़ मर्वी अहादीस के बारे में दोनों क़िस्म की आरा मौजूद हैं, कुछ ने इन अहादीस को क़ाबिल-ए-क़बूल क़रार दिया है और कुछ ने इन अहादीस की असनाद पर जर्ह करते हुए इन्हें मौज़ूअ क़रार दिया है। इसी तरह आइम्मा-ए-अरबा में भी इस बारे में इख़्तिलाफ पाया जाता है। इसलिए हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहि इस नमाज़ को मुस्तहब का दर्जा भी नहीं देते जबकि दूसरे फ़ुक़्हा इसे मुस्तहब क़रार देते हैं और इसकी फ़ज़ीलत के भी क़ाइल हैं।

मेरे नज़दीक इस नमाज़ का पढ़ना ज़रूरी नहीं लेकिन अगर कोई शख़्स अपने तौर पर यह नमाज़ पढ़े तो फिर हमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इस इरशाद को पेश-ए-नज़र रखना चाहिए जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बयान फ़रमाया है कि एक शख़्स ऐसे वक़्त में नमाज़ अदा कर रहा था जिस वक़्त में नमाज़ जायज़ नहीं। उसकी शिकायत हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हुई तो आपने उसे उत्तर दिया कि मैं इस आयत का मुसद्दक़ नहीं बनना चाहता "اَرَاَيۡتَ الَّذِيۡ يَنۡهٰى عَبۡدًا اِذَا صَلّٰى" (सूरह अल्-अलक़:8) अर्थात तूने देखा उसको जो एक नमाज़ पढ़ते बंदे को मना करता है।

(अल्-बद्र, नंबर 15, जिल्द 2, दिनांक 1 मई 1903, पेज 114) (मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, किताब सलात-अल्-ईदैन, बाब अस-सलात क़ब्ल खुरूजिल इमाम व बअद, अल्-जुज़ 3, हदीस नंबर 5626)

अतः अगर कोई यह नमाज़ अकेले पढ़ना चाहे तो हम उसे रोकते नहीं हैं। लेकिन इस नमाज़ को बाजमाअत अदा करना बिदअत है और मना है। जहां तक इस नमाज़ के पढ़ने का तरीक़ा है तो सुनन अबी दाऊद में मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि आप चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में सूरत फातिहा और क़ुरआन-ए-करीम की क़िराअत से फ़ारिग़ होकर 15 मर्तबा "सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर" पढ़ें। फिर रुकू में 10 मर्तबा। फिर रुकू से उठकर 10 मर्तबा। फिर सजदा में 10 मर्तबा। फिर दोनों सजदों के दरमियानी क़अदा में 10 मर्तबा। फिर दूसरे सजदा में 10 मर्तबा और फिर दूसरे सजदा से उठकर 10 मर्तबा यह तस्बीहात पढ़ें। इस तरह हर रकअत में 75 मर्तबा यह तस्बीहात होंगी। और अगर आप ताक़त रखते हों तो रोज़ाना एक मर्तबा या हर जुमा को एक मर्तबा या हर महीने में एक मर्तबा या हर साल में एक मर्तबा या अपनी पूरी उम्र में एक मर्तबा यह नमाज़ पढ़ें।

(सुनन अबी दाऊद, किताब अस-सलात, बाब सलात-अत-तस्बीह)

प्रश्न: एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ से सरकारी और गैर-सरकारी बैंकों से मिलने वाले मुनाफ़े के बारे में पूछा कि क्या यह सूद के ज़ुमरे में आता है या नहीं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब दिनांक 23 अगस्त 2021 में इस सवाल का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया:

उत्तर: बैंक या किसी मालियाती इदारे में इस शर्त के साथ रक़म जमा करवाना कि मुझे इस पर पहले से तय शुदा मुअय्यन शरह के साथ सिर्फ़ मुनाफ़ा मिले, यह सूरत नाजायज़ है, क्योंकि यह ज़ाइद रक़म सूद के ज़ुमरे में आती है। लेकिन अगर बैंक या मालियाती इदारे में नफ़ा व नुक़्सान में शिरकत की शर्त के साथ रक़म जमा करवाई जाए जैसा कि हमारे पाकिस्तान में PLS अर्थात Profit and Loss Sharing अकाउंट्स होते हैं, ऐसे अकाउंट से मिलने वाली ज़ाइद रक़म सूद में शामिल नहीं और इंसान इसे अपने ज़ाती मसरूफ़ में ला सकता है।

इलावा अज़ीं हुकूमती बैंक या हुकूमती मालियाती इदारे चूंकि अपने सरमाए को मुल्क भर के लिए रिफ़ाही कामों में लगाते हैं और इन रिफ़ाही कामों से न सिर्फ़ उस बैंक या मालियाती इदारे में रक़म जमा करवाने वाला फ़ाइदा उठाता है बल्कि उस मुल्क के दूसरे अवाम व ख़वास भी फ़ायदा उठा रहे होते हैं। मज़ीद यह कि इन हुकूमती बैंकों और मालियाती इदारों की सरमायाकारी से मुल्की माइशत में तरक़्क़ी होती और रोज़गार के ज़्यादा मौके पैदा होते हैं जो हुकूमत की आमदनी में इज़ाफ़ा का बाइस होते हैं। ऐसी सूरत में यह हुकूमती बैंक या हुकूमती मालियाती इदारे जब अपने पास रक़म जमा करवाने वाले अवाम व ख़वास को अपने मुनाफ़े में शरीक करते हैं और अपने मुनाफ़े में से कुछ मुअय्यन हिस्सा अपने अकाउंट होल्डर्स को भी देते हैं तो यह जायज़ है और यह ज़ाइद मिलने वाला मुनाफ़ा सूद के ज़ुमरे में नहीं आता और इंसान इसे अपने ज़ाती मसरूफ़ में ला सकता है।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 17 July 2025 Issue No. 29

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

डॉक्टर (MBBS) पद हेतु विज्ञापन

नूर अस्पताल, कादियान

आवश्यक योग्यताएँ / शैक्षणिक योग्यता / अनुभव

उम्मीदवार ने MBBS की डिग्री रोटेटरी इंटर्नशिप सहित पूरी की हो।

किसी भी राज्य की मेडिकल काउंसिल में पंजीकृत हो।

किसी प्रतिष्ठित अस्पताल में कम से कम 2 वर्ष का अनुभव हो।

आयु 30 वर्ष से अधिक न हो।

(परिस्थितियों के आधार पर विशेष मामलों में छूट पर विचार किया जा सकता है।)

ग्रेड 20052-561-24540-784-33948-884-41020, नियमानुसार सुविधाएँ सहित।

उम्मीदवार स्वस्थ हो, उसकी धार्मिक व नैतिक स्थिति अच्छी हो, सभ्य हो तथा मरीजों व सहकर्मियों के साथ धैर्यपूर्ण व्यवहार रखता/रखती हो।

पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाएगी।

आवश्यक निर्देश:

साप्ताहिक अखबार "बद्र" में प्रकाशित पिछले विज्ञापन के 2 महीने के भीतर प्राप्त आवेदनों पर ही विचार किया जाएगा।

इच्छुक उम्मीदवार अपने आवेदन प्रिंटेड फॉर्म पर ज़िला अमीर/स्थानीय अमीर/सदर जमाअत/मुबल्लिग इंचार्ज के सत्यापित हस्ताक्षर व मुहर के साथ प्रस्तुत करें।

इंटरव्यू में सफ़ल होने पर उम्मीदवार को नूर अस्पताल, कादियान में मेडिकल जाँच करानी होगी। सेवा के योग्य वही उम्मीदवार होगा जो अस्पताल के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ पाया जाए।

कादियान आने-जाने का यात्रा खर्च व मेडिकल सर्टिफिकेट का खर्च उम्मीदवार के स्वयं के जिम्मे होगा।

इंटरव्यू के समय मूल शैक्षणिक दस्तावेज साथ लाना अनिवार्य होगा।

नोट: इंटरव्यू की तिथि उम्मीदवारों को बाद में सूचित की जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

नज़रात दीवान सदर, अंजुमन अहमदिया कादियान, गुरदासपुर, पंजाब। पिन कोड: 143516

मोबाइल: 9682587713, 9888232530, 9682627592

कार्यालय: 01872-501130

ईमेल: diwan@qadian.in

★ ★ ★

वाक़्फ़ीन-ए-नौ और ग़ैर-वाक़्फ़ीन-ए-नौ छात्र दीन की सेवा के जज़्बे के साथ जामिया अहमदिया में दाख़िला लें

जामिया अहमदिया कादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित वह पवित्र संस्थान है जहाँ से अब तक सैकड़ों उलेमा और मुबल्लेगीन शिक्षा प्राप्त कर इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने का पवित्र कर्तव्य निभा रहे हैं। सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी छात्रों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थापित इस पवित्र धार्मिक संस्थान से शिक्षा प्राप्त कर सिलसिले की सेवा की ओर ध्यान आकर्षित कराया है। अतः सैय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इर्शादात की रोशनी में अधिक से अधिक वाक़्फ़ीन-ए-नौ और ग़ैर-वाक़्फ़ीन-ए-नौ छात्रों को जामिया अहमदिया में दाख़िला लेकर धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर सिलसिले की सेवा के लिए स्वयं को प्रस्तुत करना चाहिए। इसलिए जो छात्र जामिया अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं, वे शोबा वक़्फ़-ए-नौ भारत या नज़ारत तालीम से संपर्क करें और जल्द से जल्द जामिया अहमदिया के दाख़िला फॉर्म को भरकर दफ़्तर वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) में भेजें।

दाख़िले की शर्तें:

1. मैट्रिक पास छात्र के लिए आयु सीमा 17 वर्ष और 2+ पास छात्र के लिए 19 वर्ष है। आयु सीमा में हुफ़्फ़ाज़ कराम को विशेष रूप से छूट दी जा सकती है।

2. जामिया अहमदिया में दाख़िले के लिए नेशनल करियर प्लानिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत छात्रों का इंटरव्यू और लिखित परीक्षा लेगी और जामिया अहमदिया के लिए चयन करेगी। लिखित परीक्षा में क़ुरआन मजीद, इस्लाम, अहमदियत, धार्मिक ज्ञान, उर्दू, अंग्रेज़ी और सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न होंगे।

3. लिखित परीक्षा और इंटरव्यू में सफ़ल होने वाले छात्रों का नूर अस्पताल कादियान से मेडिकल टेस्ट होगा। लिखित परीक्षा, इंटरव्यू और मेडिकल टेस्ट में पास होने वाले छात्रों को सैय्यदना हज़ूर अनवर की मंज़ूरी से जामिया अहमदिया में दाख़िला दिया जाएगा।

4. ग्रेजुएशन पास छात्रों को जामिया अहमदिया में दाख़िले की प्राथमिकता दी जाएगी।

दाख़िला फॉर्म मंगवाने के लिए पता :
waqfenau@qadian.in
वक़्फ़-ए-नौ डिपार्टमेंट (नज़ारत तालीम)
सिविल लाइन, कादियान
ज़िला: गुरदासपुर, पंजाब (भारत) पिन: 143516
संपर्क: 01872-500975, 9988991775
(सदर नेशनल करियर प्लानिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad